सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक: 48 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, मंगलवार 24 मार्च, 2026
मूल्य ₹ 3/-

व्यक्ति अकेले पैदा होता है
और अकेले मर जाता है और
वो अपने अच्छे और बुरे कर्मों
का फल खुद ही भुगतता है
और वह अकेले ही नर्क या स्वर्ग जाता है।
-चाणक्य

अरुंधति बनीं फरवरी की सर्वश्रेष्ठ... 7 | केरल में वोट बैंक के लिए बदली... 3 | प्रदेश का किसान बर्बाद हो गया... 2

संजय राउत की किताब 'अनलाइकली पैराडाइज' से राजनीतिक विस्फोट

» अनलाइकली पैराडाइज का प्रहार- किताब बनी शस्त्र और मंच बना महाभारत का रणक्षेत्र

» संजय राउत का एलान : डरने वालों के लिए नहीं लिखी गई यह किताब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

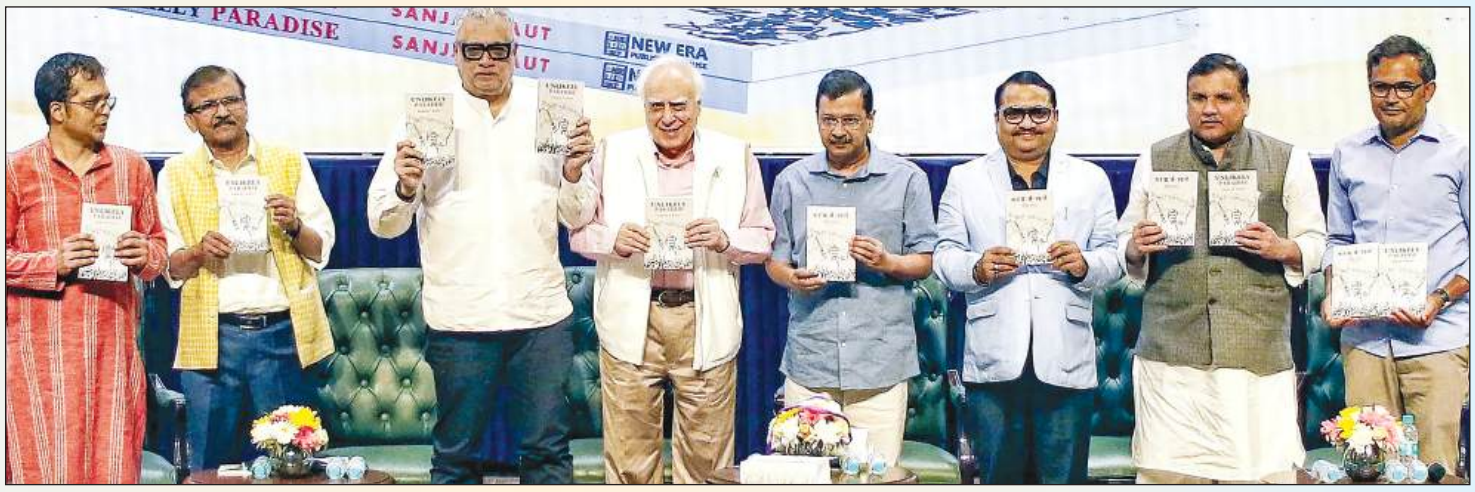

नई दिल्ली। देश की राजधानी में शिवसेना यूबीटी नेता और सांसद संजय राउत की पुस्तक अनलाइकली पैराडाइज का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ अधिवक्ता और सांसद कपिल सिब्बल, दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, 4 पीएम के संपादक संजय शर्मा के साथ अन्य प्रमुख व्यक्तियों की उपस्थिति ने आयोजन को विशेष महत्व प्रदान किया। यह कोई साधारण पुस्तक विमोचन नहीं था। यह उस महाभारत का शंखनाद था जिसमें शब्दों को हथियार बनाकर सियासत के कुरुक्षेत्र में उतरा गया हो।

जी हां नई दिल्ली की जमीन पर जब अनलाइकली पैराडाइज का अनावरण हुआ तो यह महज एक किताब नहीं रह गयी बल्कि यह चुनौती बन गयी, यह सवाल बन गयी और सत्ता के गलियारों में गूंजता हुआ एक साहसिक एलान बन गयी। पुस्तक विमोचन के अवसर पर संजय राउत ने मंच से जो कहा उसने पूरे माहौल को तल्ख बना दिया। उन्होंने कहा कि यह किताब उन लोगों के बीच लॉन्च हो रही है जो किसी से डरते नहीं है। जो सच को सच कहने की ताकत रखते हैं। मंच पर मौजूद चेहरे कपिल सिब्बल, अरविंद केजरीवाल और वरिष्ठ पत्रकार संजय शर्मा यह सिर्फ अतिथि नहीं थे बल्कि इस कथा के पात्र थे। हर एक की मौजूदगी अपने आप में एक संदेश थी कि यह किताब सत्ता के खिलाफ खड़े होने वालों की आवाज है। राउत ने अपने अंदाज में कहा कि यह किताब उन सच्चाइयों को सामने लाती है जिन्हें अक्सर दबा दिया जाता है। उन्होंने संजय शर्मा की तारीफ करते हुए कहा कि आज के दौर में सच छापना सबसे बड़ा साहस है। किताब की लांचिंग किसी साहित्यिक आयोजन की तरह शांत नहीं थी। यह एक राजनीतिक विस्फोट था। हर लाइन में दम था हर बयान में संदेश और हर मुस्कान के पीछे छिपी थी एक रणनीति जो साफ जाहिर हो रही थी।

सिस्टम के खिलाफ आवाज है यह किताब : केजरीवाल

अरविंद केजरीवाल की मौजूदगी ने इस आयोजन को सीधे जनता से जोड़ दिया। विमोचन के अवसर पर उन्होंने बोलते हुए कहा कि आज राजनीति में पारदर्शिता की सबसे ज्यादा जरूरत है और ऐसी किताबें उस दिशा में एक कदम हैं। केजरीवाल ने इस किताब को सिस्टम के खिलाफ आवाज बताया। उन्होंने कहा कि जब सिस्टम जवाब नहीं देता तब किताबें सवाल बनकर सामने आती हैं। उनका यह बयान साफ करता है कि यह किताब सिर्फ अतीत नहीं बल्कि वर्तमान की राजनीति को भी प्रभावित करने की क्षमता रखती है।

साहस का दस्तावेज है किताब : कपिल सिब्बल

कपिल सिब्बल इस मंच पर सिर्फ एक अतिथि नहीं थे। वह उस विचारधारा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे जो सवाल पूछने से डरती नहीं। कपिल सिब्बल ने अपने भाषण में कहा कि आज के दौर में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सबसे बड़ी चुनौती के दौर से गुजर रही है। सिब्बल ने इस किताब को साहस का दस्तावेज बताया। उनका कहना था कि जब सत्ता के खिलाफ बोलना मुश्किल हो जाए तब किताबें ही सच का सबसे बड़ा माध्यम बनती हैं। उन्होंने यह भी इशारा किया कि लोकतंत्र में असहमति को दबाना खतरनाक संकेत है। और ऐसे समय में इस तरह की किताबें लोकतंत्र को जीवित रखने का काम करती हैं।

> "मुंबई में कपिल सिब्बल, अरविंद केजरीवाल, संजय शर्मा, दिग्विजय सिंह, डेरेक ओब्रायन और संजय सिंह की मौजूदगी में शानदार लांचिंग"

हाल के वर्षों में कई किताबों ने राजनीतिक हलचल मचाई है चाहे वह नेताओं की आत्मकथाएं हों या सत्ता के अंदरूनी खेल को उजागर करने वाली किताबें।

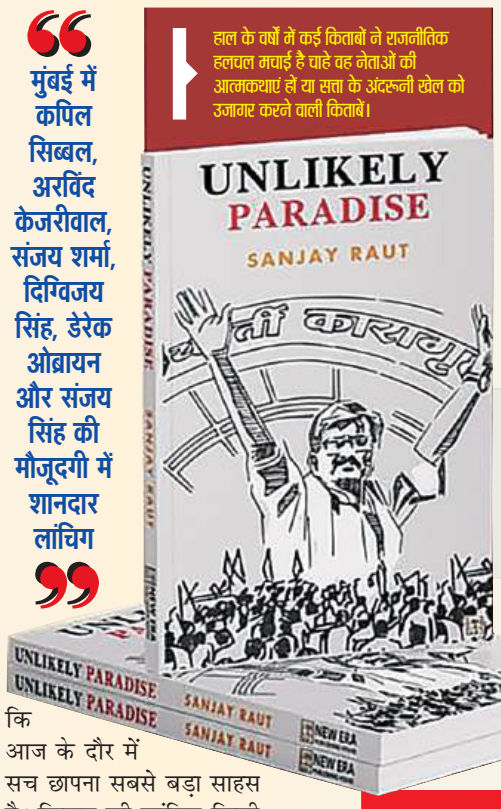

सच छापना सबसे मुश्किल काम : संजय शर्मा

4पीएम के संपादक संजय शर्मा ने मंच से बोलते हुए कहा कि आज के दौर में सच को शब्द देना जितना जरूरी है उतना ही जोखिम भरा भी हो गया है। आज सच छापना सबसे मुश्किल काम है लेकिन यही सबसे जरूरी भी है। उन्होंने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि सच लिखने के चलते आप को कब असहज स्थिति का सामना करना पड़ जाए कहा नहीं जा सकता। उन्होंने कहा कि मुकदमें/धमकियां मिलना तो आम बात है। आज के दौर में सच के साथ खड़ा होना मौत को दावत देना जैसा हो गया है। कभी ईडी कभी सीबीआई तो कभी कोई दूसरी जांच एजेंसी सीधे धमकी देने पर उतारू हैं। उन्होंने कहा कि निष्पक्ष और निर्भीक लेखन लगातार चुनौतियों का सामना कर रहा है। संजय शर्मा ने विस्तार से बताया कि इस किताब को तैयार करने की प्रक्रिया आसान नहीं रही।

सिर्फ घटनाओं का विवरण नहीं है अनलाइकली पैराडाइज

किताब की बात करें तो यह सिर्फ घटनाओं का विवरण नहीं बल्कि एक दृष्टिकोण है। एक ऐसा नजरिया जो सत्ताधारी सोच को चुनौती देता है। यह वही दौर है जहां किताबें अब सिर्फ लाइब्रेरी में नहीं रहतीं वह संसद के बाहर टीवी स्टूडियो में और सोशल मीडिया के रणक्षेत्र में लड़ाई लड़ती हैं। हाल के वर्षों में कई किताबों ने राजनीतिक हलचल मचाई है चाहे वह नेताओं की आत्मकथाएं हों या सत्ता के अंदरूनी खेल को उजागर करने वाली किताबें। अनलाइकली पैराडाइज भी उसी कड़ी में एक नया विस्फोट है।

सच की परंपरा को आगे बढ़ा रही है अनलाइकली पैराडाइज

राजनीति और किताबों का रिश्ता नया नहीं है लेकिन हाल के वर्षों में यह और ज्यादा मजबूत हुआ है। पूर्व सेना प्रमुख नारवाणे की किताब ने जिस तरह से सुर्खियां बटोरी थी उसने यह साबित कर दिया कि किताबें सिर्फ पन्नों का संग्रह नहीं बल्कि सियासत का हथियार भी हैं। नारवाणे की किताब ने सत्ता सेना और रणनीति के कई ऐसे पहलुओं को सामने लायी जिन पर पहले कभी खुलकर चर्चा नहीं हुई थी। और अब अनलाइकली पैराडाइज उसी परंपरा को आगे बढ़ा रही है।

डरने वालों में से नहीं

आज जब किताबें सिर्फ पढ़ने के लिए नहीं बल्कि सोच बदलने के लिए लिखी जा रही हैं तब अनलाइकली पैराडाइज उसी सिलसिले की अगली कड़ी बनकर उभरी है। संजय राउत की अनलाइकली पैराडाइज किताब विमोचन के बाद से ट्रेंड कर रही है और चर्चाओं में यह किसी भी दूसरी किताब को पीछे छोड़ चुकी है। संजय राउत जो अपने बेबाक अंदाज के लिए जाने जाते हैं ने इस किताब के जरिए एक बार फिर यह साबित किया कि वे सिर्फ नेता बल्कि बेहतरीन लेखक भी है। कार्यक्रम में कपिल सिब्बल की मौजूदगी ने इसे कानूनी और वैचारिक धार दी वहीं अरविंद केजरीवाल की उपस्थिति ने इसे जन राजनीति से जोड़ दिया। यह एक ऐसा मंच बन गया जहां विपक्ष की कई धाराएं एक साथ दिखीं।

प्रदेश का किसान बर्बाद हो गया : अखिलेश यादव

» बोले- यूपी के आलू किसान खुदाई न करके जोत रहे हैं खेत

» योगी सरकार करे उनसे सीधी खरीद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भाजपा सरकार पर एक बार फिर प्रहार किया है। सपा मुखिया ने निशाना साधते हुए कहा कि प्रदेश में किसान बर्बाद हो गया है और आलू उत्पादकों को उनकी फसल का उचित मूल्य नहीं मिल रहा। उन्होंने आरोप लगाया कि आगरा, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, इटावा और एटा समेत कई जिलों में किसान भारी नुकसान झेल रहे हैं। हालात ऐसे हैं कि किसानों ने आलू की खुदाई तक नहीं कराई और ट्रैक्टर से फसल जोत दी।

गोमती नगर स्थित लोहिया पार्क में डॉ. राम मनोहर लोहिया की प्रतिमा पर माल्यार्पण के बाद उन्होंने कहा कि सरकार ने आलू खरीद का वादा किया था, लेकिन अब तक यह स्पष्ट नहीं किया कि इसके लिए कितना बजट तय किया गया। अखिलेश यादव ने निवेश को लेकर भी सरकार पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि एमओयू के जरिए हुए निवेश में कितना जमीन पर उतरा, किस औद्योगिक नीति के तहत निवेश आया और कितने लोगों को रोजगार मिला, इसका जवाब सरकार दे।

प्रदेश में अपराध बढ़ रहा है दोषियों को बचाया जा रहा

उन्होंने महंगाई और रसोई गैस संकट को लेकर कहा कि एलपीजी सिलिंडर के लिए लंबी कतारें लग रही हैं और छोटे कारोबार प्रभावित हो रहे हैं। कानून-व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश में अपराध बढ़ रहा है। दोषियों को बचाया जा रहा है, जिससे सरकार की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं।

सलाहुद्दीन के घर पर जाकर दी ईद की मुबारकबाद

ईद के मौके पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व सीएम अखिलेश यादव, पूर्व राज्य मंत्री सलाहुद्दीन सिद्दीकी के लखनऊ स्थित आवास पहुंचे और उन्हें ईद की मुबारकबाद दी। इस दौरान उनका भव्य स्वागत किया गया। इस मौके पर बहुजन समाज पार्टी के प्रवक्ता डॉ. एमएच खान ने समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। अखिलेश यादव ने उनका पार्टी में स्वागत करते हुए कहा कि उनके आने से पार्टी को मजबूती मिलेगी। इस मौके पर सुन्नी धर्मगुरु मौलाना खालिद रशीद समेत कई लोग मौजूद रहे।

भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरू का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणाश्रोत : मनीष हिंदवी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ । स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करने वाले, युवाओं में देशभक्ति की भावना जगाने वाले देश के महान क्रांतिकारी योद्धा शहीद भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु के बलिदान दिवस के अवसर पर प्रदेश कांग्रेस कार्यालय लखनऊ पर कांग्रेसजनों द्वारा उक्त महान क्रांतिकारियों के चित्रों पर माल्यार्पण कर उनके अदम्य साहस, देशभक्ति एवं बलिदान को नमन किया गया।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी मीडिया विभाग के वाइस चेयरमैन मनीष हिंदवी ने कहा कि भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरू जैसे महान क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति देकर देश को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है और उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि हमें उनके दिखाए मार्ग पर चलते हुए देश की एकता, अखंडता और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष करते रहना चाहिए।

इस मौके पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी मीडिया विभाग के वाइस चेयरमैन मनीष हिंदवी, उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी विधि एवं मानवाधिकार विभाग के चेयरमैन एड. अली आसिफ जमा रिजवी, किसान कांग्रेस मध्य जोन के अध्यक्ष बृज मौर्या, शिक्षक प्रकोष्ठ के चेयरमैन डॉ. अमित कुमार राय, प्रो. श्रवण कुमार गुप्ता, अनामिका यादव, सिद्धि श्री, सर्वेश श्रीवास्तव, सुमन त्रिवेदी, ममता सक्सेना, नवीन सक्सेना, माया सिंह आदि ने भी उक्त महान क्रांतिकारी योद्धाओं को श्रद्धासुमन अर्पित कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की।

भाजपा के हितों की नहीं, राष्ट्र के हितों की सोचें : प्रमोद तिवारी

लखनऊ। कांग्रेस सांसद प्रमोद तिवारी ने लोकसभा में प्रधानमंत्री के बयान की आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि कई अहम मुद्दों को नजरअंदाज किया गया। उन्होंने कहा कि वे गैस का जिक्र करना भूल गए। एलपीजी सिलेंडर के लिए लंबी-लंबी कतारें लगी हैं। सरकार ने कोई तैयारी नहीं की थी। आपने ईरान के सर्वोच्च नेता के निधन पर दो शब्द तक नहीं कहे, इसके देश पर दूरगामी परिणाम होंगे। भाजपा के हितों की नहीं, राष्ट्र के हितों की सोचें।

मोदी इजरायल-अमेरिका से अपनी मित्रता का लाभ उठाएं : रामगोपाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। समाजवादी पार्टी (एसपी) के सांसद रामगोपाल यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से पश्चिम एशिया में चल रहे युद्ध को रोकने के लिए इजरायल के प्रधानमंत्री और अमेरिकी राष्ट्रपति के साथ अपने संबंधों का लाभ उठाने का आह्वान किया।

लोकसभा में मोदी के संबोधन के बाद पत्रकारों से बात करते हुए यादव ने भारत की अर्थव्यवस्था पर इस संघर्ष के प्रतिकूल प्रभाव पर जोर दिया और प्रधानमंत्री से आग्रह किया कि वे इजरायल, अमेरिका और ईरान के साथ अपने संबंधों का उपयोग करके इस संघर्ष को रोकें, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि इसने दुनिया को विनाश के कगार पर ला खड़ा किया है। यादव ने कहा कि हमारे और कई अन्य देशों की अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई है। प्रधानमंत्री को इजरायल के प्रधानमंत्री और अमेरिकी राष्ट्रपति के साथ अपनी मित्रता और ईरान के साथ हमारे सदियों पुराने संबंधों का लाभ उठाते हुए इस युद्ध को रोकने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि इसने पूरी दुनिया को विनाश के कगार पर ला खड़ा किया है।

अगर भगत सिंह प्रधानमंत्री बनते तो भारत की स्थित अलग होती : भगवंत

» देश के कुछ स्वार्थी नेताओं ने जीवित रहते हुए ही अपने नाम पर स्टेडियम बनवा लिए हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने शहीद-ए-आजम भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के शहीदी दिवस पर हुसैनीवाला पहुँचकर महान क्रांतिकारियों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर उन्होंने शहीदों के सपनों के रंगला पंजाब (जीवंत पंजाब) के निर्माण के प्रति अपनी सरकार की दृढ़ प्रतिबद्धता दोहराई।

मान ने देश के महानतम क्रांतिकारियों की विरासत का आह्वान किया और केंद्र द्वारा इन स्वतंत्रता सेनानियों को भारत रत्न से ''लगातार वंचित रखे जाने'' पर सवाल उठाया। मुख्यमंत्री ने स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव की शहीदी दिवस पर इन क्रांतिकारियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए कहा कि यदि ऐसे साहसी, युवा-प्रेरित नेतृत्व ने भारत के शुरुआती वर्षों को आकार दिया होता और देश की बागडोर ऐसे ही युवाओं को सौंपी गई होती तो भारत की स्थिति पूरी तरह से अलग होती। मुख्यमंत्री ने इस ऐतिहासिक स्थल पर 24.99 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले हुसैनीवाला हेरिटेज कॉम्प्लेक्स की आधारशिला रखी। केंद्र सरकार की भारत दर्शन योजना के तहत वित्त पोषित यह प्रोजेक्ट क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने और युवा पीढ़ी को क्रांतिकारी इतिहास से जोड़ने का काम करेगा। मुख्यमंत्री ने बाद में एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा, ''देश के कुछ स्वार्थी नेताओं ने तो जीवित रहते हुए ही अपने नाम पर स्टेडियम बनवा लिए हैं। लेकिन उन्होंने शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव जैसे वीर शहीदों को सम्मानित करने के लिए कुछ खास नहीं किया, जिन्होंने मातृभूमि की आजादी के लिए मुस्कुराते हुए फांसी के फंदे पर झूल गए। उन्होंने कहा, ''इन महान क्रांतिकारियों ने कम उम्र में ही अपने प्राणों की आहुति दे दी, लेकिन आजादी के बाद, दूसरों ने सत्ता के गलियारों पर कब्जा कर लिया और उस आजादी का श्रेय ले लिया जिसके लिए उन्होंने लड़ाई नहीं लड़ी थी।'' मान ने कहा कि उनकी सरकार को मोहाली हवाई अड्डे का नाम शहीद भगत सिंह अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा।

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

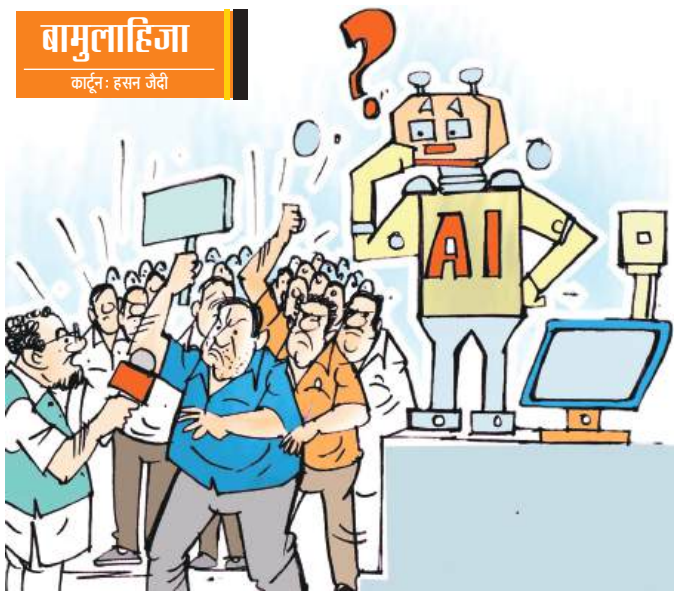

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को एक समान मानदेय दिया जाए : पाल

» भाजपा सांसद ने अपनी सरकार से की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

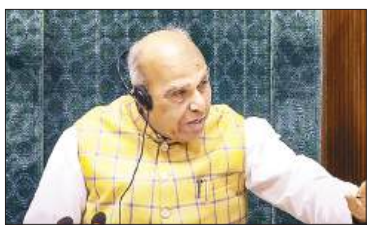

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद ने देश भर में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं का मानदेय एक समान करने तथा उन्हें 26 सप्ताह का मातृत्व अवकाश दिये जाने की मांग की। लोकसभा में शून्य काल के दौरान यह मुद्दा उठाते हुए भाजपा के जगदंबिका पाल ने कहा कि देश में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं की संख्या करीब 12 लाख 93 हजार है।

उन्होंने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं का वेतन एक समान करने की मांग करते हुए कहा, ''उनके महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, मानदेय के रूप में उन्हें विभिन्न राज्यों में छह हजार रुपये, आठ हजार रुपये या दस हजार रुपये मिल रहे हैं। भाजपा सांसद ने सरकार से आग्रह किया कि चूंकि वे राष्ट्रीय योजनाओं को वास्तविकता की धरातल पर उतारने का काम कर रही हैं, इसलिए उन्हें नियमित करने पर विचार किया जाए। पाल ने यह भी कहा कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को वर्तमान में मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, 2017 का लाभ नहीं मिल रहा है। उन्होंने सरकार से इन्हें भी इस कानून के तहत 26 सप्ताह का मातृत्व अवकाश देने की मांग की।

सपा सांसद ने उठाया बसौर बरार समुदाय का मुद्दा

समाजवादी पार्टी (सपा) के नारायणदास अहिरवार ने आरोप लगाया कि उनके निर्वाचन क्षेत्र जालौन (उत्तर प्रदेश) में बसौर-बरार समुदाय के लोगों की संख्या शून्य घोषित किये जाने से वे सरकार की कल्याण योजनाओं के लाभ से वंचित हो गए हैं। उन्होंने दावा किया, ''दिनांक छह जुलाई 2024 को परियोजना निदेशक द्वारा (उप्र) शासन को भेजे गए पत्र में यह उल्लेख किया गया कि जिले में इस जाति के लोगों की संख्या शून्य है।

केरल में वोट बैंक के लिए बदली विचारधारा?

सबरीमाला में महिलाओं के प्रवेश पर एलडीएफ का रिवर्स गियर

- सबरीमाला में 50 की उम्र वाली पाबंदी बरकरार रखने का फैसला
- कांग्रेस और बीजेपी द्वारा संभावित फायदा उठाने का था डर
- परंपरावादियों को नाराज होने से बचाने की योजना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केरल में चुनावों की घोषणा हो चुकी है, पर उससे पहले ही वहां की राजनीति में कुछ बदलाव देखने को मिला। पिछले शुक्रवार को हुई एक विशेष कैबिनेट बैठक में राज्य सरकार ने त्रावणकोर देवस्वम बोर्ड (टीडीबी) के उस प्रस्ताव को हरी झंडी दे दी, जिसमें 50 साल से कम उम्र की महिलाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध को बरकरार रखने की बात कही गई है।

केरल की पिनाराई विजयन सरकार ने सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश को लेकर अपने वर्षों पुराने स्टैंड को पूरी तरह पलट दिया है। कभी संवैधानिक समानता की दुहाई देने वाली लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (एलडीएफ) सरकार ने अब सुप्रीम कोर्ट में भगवान अयप्पा की सदियों पुरानी परंपराओं और भक्तों की आस्था का समर्थन करने का निर्णय लिया है। उधर इस फसले के बाद सियासी गलियारे में यह चर्चाहै कि राज्य में भाजपा के तेजी बढ़ती पैठ के बाद उसके हिंदुत्व के धार को कुंद करने की तैयारी है।

कैबिनेट बोली आस्था को प्राथमिकता

एक विशेष कैबिनेट बैठक में राज्य सरकार ने त्रावणकोर देवस्वम बोर्ड के उस प्रस्ताव को हरी झंडी दे दी, जिसमें 50 साल से कम उम्र की महिलाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध को बरकरार रखने की बात कही गई है। सरकार 14 मार्च की समय सीमा तक सुप्रीम कोर्ट में एक नया हलफनामा दाखिल करेगी। यह 2018 के उस रुख से बिल्कुल उलट है, जब सरकार ने पुलिस सुरक्षा में महिलाओं को मंदिर ले जाने की वकालत की थी।

हमने कोई पलटी नहीं मारी : एम.वी. गोविंदन

सीपीआईएम के प्रदेश सचिव एम.वी. गोविंदन ने साफ किया कि पार्टी अपने मूल रुख पर कायम है। उन्होंने सरकार को निर्देश दिया है कि वह कानूनी विशेषज्ञों और विद्वानों से सलाह-मशविरा करने के बाद, साथ ही भक्तों की भावनाओं का ध्यान रखते हुए, एक उचित जवाब तैयार करे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सुप्रीम कोर्ट के सवाल व्यापक संवैधानिक मुद्दों पर केंद्रित हैं, जो सभी धर्मों को प्रभावित करते हैं, ये सवाल मंदिर में प्रवेश को लेकर सिर्फ हां या नहीं के बाइनरी जवाब तक सीमित नहीं हैं। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि आस्था और अधिकारों के बीच संतुलन बनाने के लिए चर्चाएं जरूरी हैं। गोविंदन ने किसी भी तरह के वैचारिक बदलाव से इनकार किया और पार्टी के उस इतिहास का हवाला दिया, जिसके तहत पार्टी हमेशा से विशेषज्ञों की राय के आधार पर रीति-रिवाजों का सम्मान करती आई है।

एलडीएफ और सीपीआईएम सचिवालय की मंजूरी से सरकार ने किया बदलाव

एलडीएफ और सीपीआईएम सचिवालय की मंजूरी से सरकार का यह बदलाव किया। विधानसभा चुनावों के समय के हिसाब से किया गया लगता है, ताकि इस मुद्दे का कांग्रेस और बीजेपी द्वारा संभावित फायदा उठाने के बीच, परंपरावादियों को नाराज होने से बचाया जा सके। 2018 का फैसला इंडियन यंग लॉयर्स एसोसिएशन की 2006 की एक याचिका पर आधारित था, जिसने केरल हाई कोर्ट के 1991 के प्रतिबंध को पलट दिया था, लेकिन इसने विरोध प्रदर्शनों को जन्म दिया, जिसे एलडीएफ ने उस समय एक संवैधानिक जीत के तौर पर सही ठहराया था।

सुप्रीम कोर्ट की डेडलाइन के बीच नीति में बदलाव

सरकार को 14 मार्च को सुप्रीम कोर्ट द्वारा तय की गई डेडलाइन तक एक हलफनामा दाखिल करना था। इस हलफनामे में संवैधानिक और कानूनी पहलुओं से जुड़े सात खास सवालों के जवाब दिए जाएंगे-जिनमें से कोई भी सवाल सीधे तौर पर महिलाओं के प्रवेश को अनिवार्य नहीं बनाता है। यह घटनाक्रम ऐसे समय में सामने आया है, जब 2018 के उस फैसले के खिलाफ दायर पुनर्विचार याचिकाओं पर सुनवाई शुरू होने वाली है, जिसमें सभी उम्र की महिलाओं को मंदिर में प्रवेश की अनुमति दी गई थी। इन याचिकाओं पर सुनवाई 7 अप्रैल से शुरू होगी और इसकी अध्यक्षता मुख्य न्यायाधीश करेंगे।

देवस्वम बोर्ड की बात का समर्थन और चुनावी समीकरण

मंदिर के प्रबंधन की ज़िम्मेदारी संभालने वाले टीडीबी ने 2 मार्च को एक प्रस्ताव पारित किया था। इस प्रस्ताव में बोर्ड ने अदालत में यह बात दोहराने का फैसला किया कि उसने कभी भी आधिकारिक तौर पर कम उम्र की महिलाओं के मंदिर में प्रवेश का समर्थन नहीं किया था। बोर्ड ने 2020 में एक वकील द्वारा व्यक्त की गई राय को उनकी निजी राय बताया और इस बात को फिर से दोहराया कि सदियों से चली आ रही रीति-रिवाजों की रक्षा करना उसका कर्तव्य है।

विपक्ष के निशाने पर लोस अध्यक्ष

माइकआफ के आरोप पर ओम बिरला का पलटवार

- अविश्वास प्रस्ताव पर चली तीखी बहस
- भाजपा व कांग्रेस आमने-सामने
- कहा- मेरे पास कोई बटन नहीं है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने विपक्षी सांसदों के निशाने पर हमेशा से रहते हैं। विपक्ष का आरोप होता है कि वह उनलोगों को संसद में बोलने नहीं देते हैं। सपा, कांग्रेस का कहना है कि लोस अध्यक्ष उनका माइकबंद कर देते हैं।

हालांकि माइक बंद करने के आरोपों को बिरला ने पूरी तरह खारिज करते हुए कहा कि स्पीकर की कुर्सी पर ऐसा कोई बटन नहीं होता। इन सबके बीच लोस अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव भी लाया गया जिस पर घंटो बहस हुई पर वह पस न हो सका। उधर लोस अध्यक्ष ने स्पष्ट किया कि सदन नियमों से चलता है और जिसे बोलने की अनुमति दी जाती है, केवल उसी का माइक्रोफोन चालू रहता है। स्पीकर को हटाने के प्रस्ताव पर मतदान विफल होने के बाद पहली बार बोलते हुए, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने इस बात को सिरे से खारिज कर दिया कि स्पीकर ने किसी भी सांसद के भाषण के दौरान उनका माइक्रोफोन बंद किया था। उन्होंने इस दावे को भी नकार दिया कि कुछ सदस्यों, विशेषकर विपक्ष के सदस्यों को, चर्चा के दौरान बोलने की अनुमति नहीं दी गई थी।

कुर्सी पर माइक्रोफोन चालू या बंद करने का कोई बटन नहीं

बिरला ने लोकसभा में अपने बयान में कहा कि कुछ सदस्यों ने यह मुद्दा भी उठाया कि विपक्षी सांसदों के माइक्रोफोन बंद कर दिए गए थे। मैंने यह बात पहले भी कही है। कुर्सी पर माइक्रोफोन चालू या बंद करने का कोई बटन नहीं है। यहां तक कि विपक्षी सांसद भी इस कुर्सी पर बैठकर काम करते समय यह बात जानते हैं। उस समय जिसे भी बोलने की अनुमति दी जाती है, उसका माइक्रोफोन चालू रहता है।

भाषण की स्वतंत्रता एक मौलिक अधिकार है, लेकिन यह सदन के नियमों और परंपराओं द्वारा नियंत्रित

संसद में भाषण की स्वतंत्रता की गारंटी देने वाले संविधान के अनुच्छेद 105 के बारे में बोलते हुए, अध्यक्ष ने कहा कि हालांकि भाषण की स्वतंत्रता एक मौलिक अधिकार है, लेकिन यह सदन के नियमों और परंपराओं द्वारा नियंत्रित होती है। उन्होंने कहा कि सदन के एक सदस्य ने अनुच्छेद 105 के तहत संसद में भाषण की स्वतंत्रता का उल्लेख किया था। हालांकि हमें संसद में भाषण की स्वतंत्रता प्राप्त है, लेकिन यह सदन के नियमों और परंपराओं द्वारा नियंत्रित होती है।

हमेशा सदन की गरिमा बनाए रखने के लिए किया काम

सदन का कोई भी सदस्य सदन के नियमों और कार्यवाही से संतुष्ट या असंतुष्ट हो सकता है, लेकिन नियमों को लागू करना मेरी जिम्मेदारी और कर्तव्य है। सत्र के शेष समय के लिए कुछ सांसदों को निलंबित करने के अपने निर्णय के बारे में बात करते हुए, बिरला ने कहा कि उन्होंने हमेशा सदन की गरिमा बनाए रखने के लिए काम किया है। उन्होंने आगे कहा कि जब भी कोई सदस्य सदन की गरिमा पर हमला करता है, तो मुझे सदन की गरिमा बनाए रखने के लिए कठिन निर्णय लेने पड़ते हैं।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

किताबों से ही सुधर सकता है बच्चों का जीवन

एक रिपोर्ट आई है जिसमें दावा किया गया भारत में किताबें पढ़ने का चलन धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। बस छात्रों में कु छ बाकी है। विशेषज्ञों का मानना है इसका सबसे बड़ा कारण मोबाइल, सोशल मीडिया व ऑनलाइन प्लेटफार्म का ज्यादा से प्रयोग होना। जबकि बहुत से शोधों में ये सामने आया है कि किताबें व्यक्ति को मजबूत करती हैं जबकि मोबाइल डिप्रेशन की ओर ले जा रहा है। अब समय आ गया है कि समाज व सरकारें इस पर विचार करें कि फिर कै से लोग किताबों की ओर वापस आएं। मोबाइल के ज्यादा उपयोग से पढ़ाई खराब हो रही है। बच्चे के स्क्रीन टाइम में बेरहमी से कटौती की जानी जरूरी है। ऐसा न किया तो शारीरिक स्वास्थ्य के साथ ही मानसिक स्वास्थ्य भी बिगडना तय है। एक मोबाइल हैंडसेट निर्माता कंपनी की ओर से किए गए शोध के अनुसार 84 फीसदी लोग सुबह उठते ही 15 मिनट मोबाइल देखते हैं। शोध यह स्पष्ट करता है कि भारतीय युवा प्रतिदिन लगभग साढ़े सात घंटे अपने मोबाइल स्क्रीन पर बिताता है। एक घंटे में पांच बार मोबाइल लॉक खोला जा रहा है, यह गंभीर विषय है।

क्या व्यक्ति अपनी खुद की नजर में इतना अशक्त और निर्बल है कि जब तक दूसरे लोग उसके कृत्यों को अच्छा नहीं कह दें या स्वीकार नहीं कर लें, तब तक उसे यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि उसने कुछ अच्छा किया है। युवा मन रील्स को रीयल मानकर इसी में उलझ- सा गया है। युवा व्यक्ति के फोटोज या एक्टिविटीज पर सोशल मीडिया पर आने वाले कमेंट्स, उसे उसके प्रारंभिक लक्ष्य से दूर कर रहे हैं, जो उम्र पढ़कर, अपनी आजीविका का रास्ता चुनकर परिवार का नाम गौरवान्वित करने की है, उस उम्र में ही वह बच्चा पढ़ाई से अधिक महत्व सोशल मीडिया के कमेंट्स को दे रहा है। समाज इस समय ऐसे वातावरण से गुजर रहा है जहां स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति अर्थात रीडिंग हैबिट तो लुप्त-सी हो चुकी है। कुछ पढ़कर आनंदित होना अब पुरानी बात है। अब मनोरंजन के नाम पर टीवी सीरियल्स हैं, जिसमें अधिकांश सीरियल्स अपराध या निम्न स्तरीय षड्यंत्रों के अलावा कुछ और नहीं परोसते। ऐसी स्थिति में सोशल मीडिया के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। अध्ययनशील व्यक्ति खुद को सफल और आनंदित महसूस करता है। एक क्लिक पर दुनिया होने की अवधारणा मानने वाले युवाओं की स्मृति और विश्लेषण क्षमता कम हो रही है। खुद के जीवन को नई दिशा देने के लिए कागज की किताब का अध्ययन आवश्यक है।

संजय

अब समय आ गया है कि समाज व सरकारें इस पर विचार करें कि फिर कै से लोग किताबों की ओर वापस आएं। मोबाइल के ज्यादा उपयोग से पढ़ाई खराब हो रही है। बच्चे के स्क्रीन टाइम में बेरहमी से कटौती की जानी जरूरी है। ऐसा न किया तो शारीरिक स्वास्थ्य के साथ ही मानसिक स्वास्थ्य भी बिगडना तय है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

एक वोट का वजन और घर की दरारें

दिनेश भारद्वाज

हरियाणा के हालिया राज्यसभा चुनाव ने एक पुरानी लेकिन अक्सर भुला दी जाने वाली सच्चाई को फिर सामने ला दिया है। लोकतंत्र में कोई भी जीत 'छोटी' नहीं होती और कोई भी चूक 'मामूली' नहीं होती। महज 0.34 वोट के अंतर से तय हुआ परिणाम केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि हमारी राजनीति के बदलते चरित्र का संकेत है। पहली नजर में यह चुनाव एक साधारण गणित जैसा दिखता था। विधानसभा में संख्या संतुलन ऐसा था कि एक सीट भाजपा और एक कांग्रेस के खाते में जाती हुई दिखाई दे रही थी।

लेकिन जैसे-जैसे चुनाव आगे बढ़ा, यह साफ हो गया कि अब राजनीति केवल अंकगणित नहीं रही; यह रणनीति, मनोविज्ञान और प्रबंधन का जटिल मिश्रण बन चुकी है। भाजपा द्वारा निर्दलीय प्रत्याशी सतीश नांदल को समर्थन देकर मैदान में उतारना इसी बदलाव का प्रतीक था। यह कदम जीतने से ज्यादा विपक्ष को अस्थिर करने की कोशिश था और इस मायने में वह सफल भी रही। कांग्रेस के भीतर हुई क्रॉस वोटिंग ने यह साबित कर दिया कि राजनीतिक दलों की सबसे बड़ी चुनौती अब विपक्ष नहीं, बल्कि अपने ही घर के भीतर पैदा हो रही दरारें हैं। कांग्रेस के लिए यह परिणाम जितना राहत देने वाला है, उतना ही असहज करने वाला भी। जीत दर्ज हो गई, लेकिन जिस तरह यह जीत किनारे पर जाकर मिली, उसने संगठन की वास्तविक स्थिति उजागर कर दी। पांच विधायकों का पार्टी लाइन से हटकर मतदान करना केवल असंतोष का संकेत नहीं, बल्कि संवादहीनता और नेतृत्व की सीमाओं की ओर भी इशारा करता है। राज्यसभा चुनाव में व्हिप लागू न होने की संवैधानिक व्यवस्था अपनी जगह है, लेकिन राजनीतिक दलों के लिए यह एक नैतिक कसौटी जरूर बन जाती है। इस पूरे घटनाक्रम में यदि कोई पक्ष अपने कौशल के कारण उभरकर सामने आया है, तो वह है चुनावी प्रबंधन। यह कहना गलत नहीं होगा कि इस चुनाव में कांग्रेस की जीत उसके संख्याबल से ज्यादा उसके प्रबंधन की जीत है।

संकट की स्थिति में नेतृत्व का सक्रिय होना, विधायकों को एकजुट रखना और संभावित नुकसान को सीमित करना, ये सभी तत्व इस बात को रेखांकित करते हैं कि आज की राजनीति में संगठनात्मक पकड़ कितनी निर्णायक हो गई है। लेकिन यही स्थिति एक बड़ा सवाल भी खड़ा करती है। क्या राजनीतिक दल अब संस्थागत मजबूती के बजाय व्यक्तित्व-आधारित प्रबंधन पर निर्भर होते जा रहे हैं? यदि किसी एक

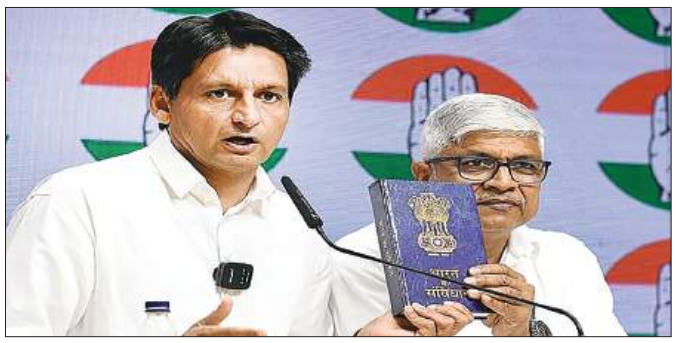

नेता की सक्रियता से ही जीत और हार तय हो रही है, तो यह दीर्घकाल में संगठन के लिए कितना टिकाऊ मॉडल है? उम्मीदवार चयन की प्रक्रिया भी इस चुनाव में चर्चा का विषय रही। जब केंद्रीय नेतृत्व स्थानीय समीकरणों को नजरअंदाज कर निर्णय लेता है, तो वह केवल एक नाम तय नहीं करता, बल्कि संगठन के भीतर संदेश भी भेजता है। कांग्रेस नेतृत्व ने भी तो एकदम नये कर्मवीर बौद्ध को प्रत्याशी बनाकर बैठे-बिठाए विधायकों की नाराजगी मोल ली। यह चुनाव उस निर्णय की परीक्षा था, जिसमें सफलता तो मिली, लेकिन वह सहज नहीं थी। यह संकेत है कि जमीनी राजनीति को समझे बिना लिए गए फैसले हमेशा जोखिम के साथ आते हैं। इस चुनाव का एक और महत्वपूर्ण पहलू रहा, वह था रद्द हुए वोट। तकनीकी कारणों से अमान्य हुए वोटों ने यह दिखाया कि लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं कितनी संवेदनशील होती हैं। एक छोटी-सी प्रक्रिया संबंधी गलती, जो सामान्य परिस्थितियों में नजरअंदाज हो सकती है, यहां निर्णायक बन गई। यह केवल राजनीतिक दलों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे चुनावी तंत्र के लिए भी एक सीख है। आमतौर पर जान-बूझकर वोट रद्द करवाने की परंपरा भी रही है। ऐसा अकेले हरियाणा ही नहीं, दूसरे सूबों में भी अकसर देखा गया है। हरियाणा की राजनीति में निर्दलीय उम्मीदवारों की भूमिका भी इस बार फिर रेखांकित हुई। भले ही वे जीत नहीं सके, लेकिन उन्होंने यह साबित कर दिया कि तीसरा विकल्प केवल औपचारिकता नहीं होता। यह उस राजनीतिक संस्कृति का हिस्सा है, जहां व्यक्तिगत समीकरण और अवसरवादिता दलगत सीमाओं को चुनौती देते रहते हैं।

चुनाव के बाद जिस तरह से राजनीतिक प्रतिक्रियाएं हरियाणा विधानसभा में हंगामा, आरोप-प्रत्यारोप और संगठनात्मक कार्रवाई की चेतावनियां के रूप में सामने आई, वे भी इस बात का संकेत हैं कि यह परिणाम केवल एक चुनावी घटना नहीं, बल्कि आने वाले समय की राजनीति को प्रभावित करने वाला मोड़ है। भाजपा के लिए यह चुनाव यह संदेश लेकर आया है कि रणनीतिक आक्रामकता से वह विपक्ष को असहज कर सकती है, भले ही हर बार जीत हासिल न हो। वहीं कांग्रेस के लिए यह स्पष्ट चेतावनी है कि केवल संख्याबल पर्याप्त नहीं है, संगठनात्मक एकजुटता और आंतरिक विश्वास ही उसकी असली ताकत हो सकते हैं।

इच्छामृत्यु की अनुमति के बावजूद बाकी सवाल

प्रमोद जोशी

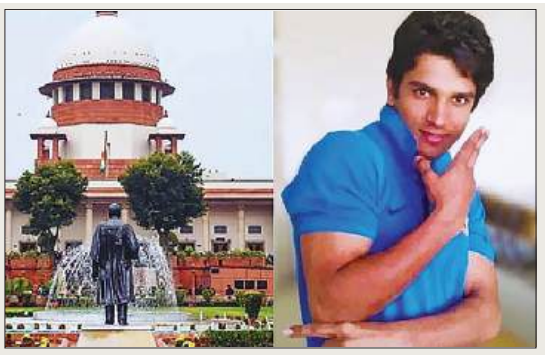

गाजियाबाद के 32 वर्षीय हरीश राणा को सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर परोक्ष इच्छामृत्यु (पैसिव यूथेनेशिया) के लिए एम्स दिल्ली के पैलिएटिव केयर विभाग में शिफ्ट कर दिया गया है। इच्छामृत्यु की प्रक्रिया को पूरा होने में कई सप्ताह लग सकते हैं, क्योंकि इसमें कई चरण शामिल हैं। हालांकि, इस प्रक्रिया की व्यावहारिकता से जुड़े कई सवाल अभी हैं, पर अब बहस एक्टिव इच्छामृत्यु यानी दवा देकर या किसी दूसरे तरीके से मृत्यु देने पर भी होगी। सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि संसद इस विषय पर कानून बनाए। 2018 और 2026 के फैसलों के बावजूद संसद ने अभी तक समग्र कानून नहीं बनाया। कोर्ट ने कई बार विधायिका से कानून बनाने की अपील की है।

पैलिएटिव केयर में ऐसी चिकित्सा देखभाल होती है, जिसका उद्देश्य गंभीर या असाध्य बीमारी से पीड़ित मरीज को आराम देना और बीमारी को पूरी तरह ठीक करने के बजाय मरीज के दर्द, सांस लेने में तकलीफ, घबराहट, बेचैनी या अन्य शारीरिक-मानसिक परेशानियों को कम करने पर ध्यान दिया जाता है। सक्रिय इच्छामृत्यु मृत्यु का एक नया कारण उत्पन्न करती है; निष्क्रिय इच्छामृत्यु पहले से ही चल रही प्राकृतिक मृत्यु में बाधा को दूर करती है। एक मृत्यु का कारण बनती है; दूसरी मृत्यु को स्वाभाविक रूप से होने देती है। एक्टिव इच्छामृत्यु यानी दवा या किसी दूसरे तरीके से मौत देना पूरी तरह अवैध है। प्रश्न है कि संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत 'जीने के अधिकार' में 'गरिमापूर्ण मरने का अधिकार' शामिल है या नहीं? सुप्रीम कोर्ट ने हां कहा है, लेकिन सीमित परिस्थितियों में। हरीश राणा केस के फैसले के बाद भी, यह बहस अभी अपूर्ण है। इच्छामृत्यु के विरोध में जो तर्क है, उसके अनुसार जीवन ईश्वर का दिया हुआ है, उसमें मानवीय हस्तक्षेप गलत है। इच्छामृत्यु के अधिकार का दुरुपयोग होने का खतरा भी है। डॉक्टर 'किलर' बन जाएंगे। कोमा में पड़े लोगों को व्यर्थ समझ लिया जाएगा। कैथलिक चर्च, कई हिंदू संगठन और इस्लामी विद्वान इसे जीवन के खिलाफ मानते हैं।

यदि इसे लागू भी किया जाए, तो देश में अच्छी पैलिएटिव केयर बहुत कम है, इसलिए कई लोग इच्छामृत्यु को 'आखिरी विकल्प' मानते हैं। इस समय बहस का केंद्र बिंदु यही है कि पैसिव इच्छामृत्यु को और सुगम बनाया जाए या नहीं, जबकि एक्टिव इच्छामृत्यु को वैध करने की मांग अभी बहुत कमजोर है। सुप्रीम कोर्ट ने साफ कहा है कि केवल असंभव रिकवरी वाले केस में, सख्त मेडिकल बोर्ड और न्यायिक देखरेख के साथ ही इसकी अनुमति देने पर विचार संभव है। बहुत से विशेषज्ञ मानते हैं कि असली समाधान बेहतर पैलिएटिव केयर की व्यवस्था को मजबूत करने में है, न कि जल्दबाजी में एक्टिव इच्छामृत्यु को वैध करने में। वर्ष 2013 में चंडीगढ़ में एक हादसे में चौथी मंजिल से गिरने के बाद से हरीश अचेत अवस्था में बिस्तर पर पड़े हुए हैं, और लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर निर्भर हैं। सुप्रीम कोर्ट ने गत 11 मार्च को उनके मामले में, पैसिव इच्छामृत्यु की अनुमति देकर भारत में पहली बार इस अधिकार के व्यावहारिक इस्तेमाल की अनुमति दी है। अदालत ने 2018 में इसे संवैधानिक अधिकार मान लिया था।

हरीश राणा के माता-पिता की याचिका को, पहले दिल्ली उच्च न्यायालय ने और फिर उच्चतम न्यायालय ने खारिज कर दिया था। 2025 में उच्चतम न्यायालय ने अपने फैसले पर पुनर्विचार किया और यह निर्णय सुनाया। यह मामला 2018 में सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्थापित और 2023 में सरलीकृत कानूनी ढांचे और इन दिशानिर्देशों को लागू करने में आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों को उजागर करता है। विशेषज्ञ सक्रिय और निष्क्रिय इच्छामृत्यु के बीच अंतर पर और भारत में मजबूत देखभाल अवसंरचना की आवश्यकता पर भी चर्चा करते हैं। जटिल समस्या यह नहीं है कि कानून किस बात की अनुमति देता है, बल्कि यह है कि रोगी, जब स्वयं बोलने में असमर्थ हो, तो कौन और किस आधार पर निर्णय कर सकता है। स्वस्थ दिमाग वाला वयस्क किसी भी चिकित्सा उपचार को अस्वीकार कर सकता है, और चिकित्सक को उस अस्वीकृति का सम्मान करना होता है। ज्यादा मुश्किल मामला अनैच्छिक मृत्यु का है। ऐसा रोगी जो स्थायी रूप से कोमा में है, जिसका अस्तित्व पूरी तरह से चिकित्सा तकनीक पर निर्भर है। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस केवी विश्वनाथन की दो-न्यायाधीशों की पीठ के इस फैसले को पूरी तरह से समझने के लिए, 2011 में अरुणा शानबाग के मामले से लेकर 2018 में कॉमन कॉज बनाम भारत संघ मामले में संवैधानिक फैसले तक की कड़ी को जोड़ना आवश्यक है।

अरुणा रामचंद्र शानबाग मुंबई के किंग एडवर्ड मेमोरियल अस्पताल में नर्स थीं, जिनका 27 नवंबर, 1973 की रात को एक वार्ड अटेंडेंट ने गला घोंट दिया था। गला घुटने से उनके मस्तिष्क में ऑक्सीजन की आपूर्ति रुक गई थी। लगभग 42 वर्षों तक वे उसी अस्पताल में अचेत अवस्था में रहीं और 2015 में उनकी स्वाभाविक मृत्यु हो गई। 2011 में, सर्वोच्च न्यायालय में उनकी जीवन रक्षक प्रणाली हटाने की अनुमति देने के लिए याचिका दायर की गई थी। दो न्यायाधीशों की पीठ ने अपने फैसले में याचिका खारिज कर दी, लेकिन भारतीय कानून में पहली बार परोक्ष इच्छामृत्यु के लिए दिशानिर्देश निर्धारित किए। अदालत ने दयामृत्यु को अस्वीकार करने के पीछे सबसे बड़ा कारण यह बताया कि मुंबई के केईएम अस्पताल की नर्सें और अन्य कर्मचारी अरुणा को मरने देना नहीं चाहते।

राम नवमी पर इन मंदिरों का करें दर्शन

चैत्र नवरात्रि का पावन पर्व 19 मार्च से शुरू हो रहा है। नौ दिवसीय इस पर्व के अंतिम दिन राम नवमी मनाई जाती है। इस वर्ष रामनवमी 27 मार्च 2026 को मनाई जा रही है। राम नवमी भगवान विष्णु के अवतार प्रभु श्रीराम की जयंती का पर्व है। इस दिन अयोध्या में राजा दशरथ के घर पर श्रीराम का जन्म हुआ था। अयोध्या राम जी की जन्मभूमि हैं, जहां वर्षों के संघर्ष के बाद राम मंदिर का निर्माण हुआ। इसके अलावा 14 वर्ष के वनवास के दौरान वह कई जगहों पर ठहरे और समुद्र मार्ग से होते हुए लंका तक पहुंचे, जहां उन्होंने लंका नरेश रावण का वध किया। राम नवमी के मौके पर अगर आप प्रभु श्रीराम के दर्शन करना चाहते हैं तो अयोध्या स्थित राम जन्मभूमि मंदिर में जा सकते हैं। इसके अलावा देश में कई प्राचीन और भव्य राम मंदिर हैं, जहां आप दर्शन के लिए जा सकते हैं।

कालाराम मंदिर

महाराष्ट्र के नासिक जिले में भगवान राम का खूबसूरत मंदिर है, जिसका नाम कालाराम मंदिर है। वनवास के दौरान भगवान श्रीराम, माता सीता और भाई लक्ष्मण के साथ पंचवटी में ही रुके थे। बाद में सरदार रंगारू ओढेकर ने इस स्थान पर मंदिर का निर्माण कराया। इस बारे में एक कहानी प्रचलित है कि सरदार रंगारू को स्वप्न आया कि गोदावरी नदी में श्रीराम की काले रंग की मूर्ति है। उन्होंने अगले ही दिन मूर्ति निकालकर मंदिर में स्थापित की।

रघुनाथ मंदिर

उत्तरी भारत यानी जम्मू कश्मीर में प्रभु श्रीराम का काफी प्रसिद्ध रघुनाथ मंदिर स्थित है। वैष्णो देवी जाने वाले श्रद्धालु रघुनाथ मंदिर जरूर जाना पसंद करते हैं। इस मंदिर में भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण जी के साथ विराजमान है। यहां रामायण और महाभारत के पात्रों की झलक भी देखने को मिल जाती है।

रामास्वामी मंदिर

दक्षिण भारत में भी राम जी का भव्य मंदिर है। तमिलनाडु के रामास्वामी मंदिर में भगवान राम की पूजा होती है। अधिकतर मंदिरों में श्री राम के साथ माता सीता और लक्ष्मण जी की प्रतिमा होती है। रामास्वामी देश का एकमात्र मंदिर हैं, जहा श्री राम सीता जी, लक्ष्मण ही भरत और शत्रुघ्न विराजमान हैं। इस मंदिर की नक्काशी महाकाव्य रामायण के मुताबिक, घटित प्रसिद्ध घटनाओं को दर्शाती है।

राम जन्मभूमि मंदिर

उत्तर प्रदेश के अयोध्या जिले में राम जी का जन्म हुआ था। यहां श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण हुआ और साल 2024 में ही मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की गई है। राम मंदिर के दर्शन के लिए विदेशों से लोग पहुंच रहे हैं। यहां राम जी बाल स्वरूप में विराजमान हैं। इस राम नवमी पर अयोध्या के राम मंदिर में दर्शन के लिए जा सकते हैं।

राजा राम मंदिर

पूरे देश में एकमात्र स्थान है, जहां प्रभु राम की राजा राम के रूप में पूजा की जाती है। मध्य प्रदेश के ओरछा जिले में उनका महल जैसा मंदिर है। यहां साल भर भक्तों की भीड़ रहती है। रोजाना इस मंदिर में गार्ड ऑफ ऑनर देकर भगवान श्रीराम को शस्त्र सलामी दी जाती है।

हंसना मना है

एक लड़की- हे भगवान, मेरी शादी किसी समझदार आदमी से करवा दो, भगवान - घर जाओ बेटी समझदार आदमी कभी शादी नहीं करते!

एक लड़का फेल हुआ तो उसके पापा ने कहा, देख-देख उस लड़की को देख, वो तुम्हारे साथ पढ़ती है और 1st आयी है। लड़का- देख देख क्या देख, उसी को देख देख के तो फेल हुआ हूं!

लड़की- अगर मैं मर जाऊं तो तुम क्या करोगे? लड़का- मैं भी मर जाऊंगा, लड़की- पर क्यों? लड़का- कभी-कभी ज्यादा खुशी भी जान ले लेती है!

फेंकू- पप्पू, जल्दी से टीवी चालू कर, 30 फीट का सांप दिखा रहे हैं, पप्पू- अरे फेकू, नहीं देख सकते हम, फेंकू- क्यों? पप्पू- क्योंकि हमारा टीवी 21 इंच का है ना।

मामा- तुझे इतनी मार क्यों पड़ी? भांजा- बारात में गलत बोल गया। मामा- क्या? भांजा- वारी वरसी खटन ग्यासी, खटके ले आंदा तार। भगंडा तभी सजेगा, जब नाचे कुडी का यार! मामा- फिर तो मार पड़नी ही थी। भांजा- मुझे तो सिर्फ मार ही पड़ी, जो बंदा नाचा उसकी तो परसों तेरहवीं है।

कहानी — राजा और मछुआरे

अंग देश के राजा के पास एक बेहद खूबसूरत तालाब था, जिसमें कई सारी मछलियां थी। जिनकी देखभाल एक मछुआरा करता था। वह राजा की सभी आज्ञा का पालन करता था। राजा को जब भी मछली खाने का मन करता मछली मंगवाते थे। एक दिन राजा के मन में यह सवाल आया कि भला हर बार यह इतनी स्वादिष्ट और बढ़िया मछली कैसे पकड़ सकता है। अपने गुप्तचरों से पता चलता है कि मछुआरे को तो मछली पकड़नी आती ही नहीं, राजा ने मछुआरे को बुलवाया और कहा, आज तुम मेरे लिए तालाब की सबसे बड़ी मछली पकड़कर लेकर आओ। मछुआरा मछली पकड़ने के लिए तालाब की ओर चल पड़ा। राजा भी पीछे-पीछे चल पड़ें। तालाब के पास पहुंचते ही मछुआरे ने एक मंत्र पढ़ा और तालाब की सबसे बड़ी मछली उसके पैरों के पास आकर गिर पड़ी। फिर मछुआरे ने तालाब को झुककर प्रणाम किया और वहां से महल की ओर निकल पड़ा। राजा यह नजारा देख बहुत आश्चर्य में हुआ। एक दिन मौका देखकर राजा ने मछुआरे से मछली पकड़ने की विधि के बारे में पूछा। राजा ने कहा, तुम ऐसा कौन सा मंत्र जानते हो, जिसके बोलते ही मछली खुद-ब-खुद तुम्हारे पास आ जाती है। कृपा करके मुझे भी वह मंत्र सिखा दो। राजा की बात सुनकर मछुआरा अचरज में पड़ गया। उसने कहा, क्षमा कीजिए महराज! मैं इस मंत्र का उच्चारण आपको नहीं सिखा सकता हूं। अंत में मछुआरा मजबूर हो गया और मंत्र सिखा दिया। राजा तालाब के किनारे गए और उस मंत्र का उच्चारण किया। तभी एक मछली उनके पैरों के पास आकर गिर पड़ी। इसके बाद राजा बहुत खुश हुए। एक दिन उन्होंने अपने दरबार में सभी लोगों को इस मंत्र के बारे में बता दिया। सभी ने पूछा कि इस मंत्र के बारे में उन्हें किसने बताया। राजा ने कहा, एक महान ऋषि ने। सभी मंत्री मंत्र का उच्चारण करने लगे। लेकिन एक भी मछली तालाब से नहीं निकली। राजा को सभी मंत्रियों के सामने काफी शर्मिंदा होना पड़ा। इसके बाद वह उस मछुआरे पर गुस्सा होने लगे और उसे सजा सुनाने का आदेश दिया। तभी तालाब से अचानक एक आवाज आई, सुनो राजन! तालाब से एक भी मछली नहीं निकली इसमें मछुआरे का कोई दोष नहीं है, बल्कि इसमें गलती तुम्हारी है। तुमने अपने गुरु को गुरु नहीं माना, जिसने तुम्हें यह मंत्र सिखाया। इसलिए मछली तालाब से नहीं निकली। अगर तुम अपने गुरु को स्वीकार करते, तो ऐसा नहीं होता। राजा ने तुरंत मछुआरे से माफी मांगी और उसे अपने गुरु के रूप में स्वीकार किया। अब मंत्र काम करने लगा और राजा भी खुश हुआ।

7 अंतर खोजें

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — किसी प्रभावशाली व्यक्ति से सहयोग प्राप्त होगा। पूजा-पाठ में मन लगेगा। तीर्थदर्शन हो सकते हैं। विवेक का प्रयोग करें, लाभ होगा। मित्रों के साथ अच्छा समय बीतेगा।

वृषभ — स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। चोट व दुर्घटना से हानि संभव है। कार्य करते समय लापरवाही न करें। बनते कामों में बाधा हो सकती है। विवाद से बचें।

मिथुन — घर-परिवार की चिंता रहेगी। किसी वरिष्ठ व्यक्ति का मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त होगा। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। घर-परिवार में प्रसन्नता रहेगी। बाहर जाने का मन बनेगा।

कर्क — लेन-देन में जल्दबाजी न करें। आवश्यक वस्तु समय पर नहीं मिलने से क्रोध रहेगा। भूमि व भवन संबंधी बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

सिंह — रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। किसी प्रबुद्ध व्यक्ति का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। यात्रा मनोरंजक रहेगी। पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी।

कन्या — बुरी सूचना मिल सकती है। मेहनत अधिक होगी। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। आय में कमी रहेगी। नकारात्मकता बढ़ेगी। विवाद से क्लेश होगा।

तुला — सामाजिक कार्यों में मन लगेगा। दूसरों की सहायता कर पाएंगे। मान-सम्मान मिलेगा। रुके कार्यों में गति आएगी। पारिवारिक सहयोग मिलेगा। व्यापार ठीक चलेगा।

वृश्चिक — उत्साहवर्धक सूचना प्राप्त होगी। भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। कोई नया बड़ा काम करने की योजना बनेगी। भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा।

धनु — यात्रा मनोरंजक रहेगी। भेंट व उपहार की प्राप्ति संभव है। किसी बड़ी समस्या का हल मिलेगा। व्यावसायिक साझेदार पूर्ण सहयोग करेंगे। आलस्य हावी रहेगा।

मकर — अनावश्यक जोखिम न लें। किसी भी व्यक्ति के उकसावे में न आएं। फालतू खर्च होगा। पुराना रोग उभर सकता है। सेहत को प्राथमिकता दें। पारिवारिक सहयोग मिलेगा।

कुम्भ — मनोरंजक यात्रा की योजना बनेगी। डूबी हुई रकम प्राप्त हो सकती है। आय में वृद्धि होगी। बिगड़े काम बनेंगे। प्रसन्नता रहेगी। मित्रों के साथ अच्छा समय व्यतीत होगा।

मीन — घर-परिवार के साथ आराम तथा मनोरंजन के साथ समय व्यतीत होगा। मान-सम्मान मिलेगा। व्यापार मनोनुकूल चलेगा। योजना फलीभूत होगी। आय में वृद्धि होगी।

बॉलीवुड | रिलीज डेट टली

अब सोहनलाल के जन्मदिन पर रिलीज होगी फिल्म दृश्यम-3

मोहनलाल की अपकमिंग फिल्म के लिए फैंस को थोड़ा और इंतजार करना पड़ेगा। मलयालम फिल्म दृश्यम 3 की रिलीज डेट टाल दी गई है। सोमवार को, एक्टर ने अपने एक्स अकाउंट पर इस हिट फ्रेंचाइजी की तीसरी फिल्म की नई रिलीज डेट का एलान किया। इस फिल्म में वह जॉर्जकुट्टी नाम के एक टीवी केबल ऑपरेटर का किरदार निभा रहे हैं। दृश्यम 3 अब 21 मई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इस दिन मोहनलाल का जन्मदिन भी है। मोहनलाल ने एक नई पोस्ट के जरिए रिलीज की नई तारीख शेयर की। कैप्शन में लिखा था, अतीत कभी चुप नहीं रहता। वह बस इंतजार करता है। जॉर्जकुट्टी आ रहा है। 21 मई 2026 को दृश्यम 3 दुनिया भर में रिलीज होगी।मेकर्स ने दृश्यम 3 के टलने की वजह नहीं बताई है। हाल ही में यश की अदाकारी वाली फिल्म टॉक्सिक को टाल दिया गया था। मध्य-पूर्व में चल रहे संघर्ष का हवाला देते हुए फिल्म की रिलीज मार्च से जून तक के लिए टाल दी गई थी। दृश्यम 2 उस हिट फ्रेंचाइजी की तीसरी किस्त है, जिसमें जॉर्जकुट्टी को पुलिस से एक गहरा राज छिपाने के लिए संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। दृश्यम (2013) और दृश्यम 2 (2021) पूरे भारत में हिट रहीं। हिंदी, सिंहली, मैंडरिन और कोरियन सहित कई भाषाओं में इनका रीमेक बनाया गया। निर्देशक जीतू जोसेफ ने कहा कि दर्शकों को बहुत ज्यादा उम्मीदें लेकर नहीं, बल्कि जिज्ञासा के साथ आना चाहिए। उन्होंने आगे कहा, यह फिल्म कोई थ्रिलर नहीं, बल्कि एक पारिवारिक ड्रामा है, जो इस बात पर केंद्रित है कि पिछले चार वर्षों में जॉर्जकुट्टी के परिवार में क्या बदलाव आए हैं।

मुंह के बल गिरी उस्ताद भगत सिंह, सोमवार तक हुआ कुल 488 करोड़ रुपये का कलेक्शन

बॉलीवुड | मसाला

19 मार्च को सिनेमाघरों में रणवीर सिंह की फिल्म धुरंधर 2 के साथ पवन कल्याण की फिल्म उस्ताद भगत सिंह रिलीज हुई। धुरंधर 2 जहां कमाई के मामले में कई रिकॉर्ड तोड़ रही है, वहीं उस्ताद भगत सिंह बॉक्स ऑफिस पर संघर्ष कर रही है। उस्ताद भगत सिंह ने पहले दिन बॉक्स ऑफिस पर 34.75 करोड़ रुपये से खाता खोला। दूसरे दिन इसके कलेक्शन में गिरावट दर्ज की गई और इसने 9 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया। तीसरे दिन इसने 9.05 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया। चौथे दिन एक बार फिर फिल्म की कमाई में गिरावट दर्ज की गई और इसका कलेक्शन 7.50 करोड़ रुपये रहा।

पांचवें दिन फिल्म उस्ताद भगत सिंह के कलेक्शन में काफी गिरावट देखने को मिल रही है। सोमवार को इसने खबर लिखे जाने तक सिर्फ 1.24 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। इस तरह से फिल्म का कुल कलेक्शन 61.54 करोड़ रुपये हो गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस फिल्म का बजट 150 करोड़ रुपये है। सिनेमाघरों में उस्ताद भगत सिंह के सामने धुरंधर 2 लगी हुई है। धुरंधर 2 की कमाई का असर इस फिल्म पर पड़ रहा है। खबर लिखे जाने तक धुरंधर 2 ने 34.10 करोड़ रुपये का कारोबार किया है। इस तरह से पांच दिनों में इस फिल्म का टोटल कलेक्शन 488.22 करोड़ रुपये हो गया है।

तेलुगु एक्शन-ड्रामा फिल्म उस्ताद भगत सिंह के निर्देशक हरीश शंकर हैं। इसमें पवन कल्याण के अलावा श्री लीला और राशि खन्ना ने अहम भूमिका निभाई है। इसमें एक ईमानदार पुलिस अफसर की कहानी दिखाई गई है। वह अन्याय और भ्रष्ट ताकतों के खिलाफ लड़ते हैं। फिल्म में वह एक आदिवासी लड़के के रूप में अपने मजबूत मूल्यों के साथ बुराई को खत्म करते हैं।

नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने सोहम शाह के साथ शुरू की हॉरर फिल्म तुम्बाड 2 की शूटिंग

सोशल मीडिया पर नवाजुद्दीन सिद्दीकी, निर्माता और अभिनेता सोहम शाह को मुंबई की एक खास जगह पर साथ देखा गया। दोनों अपनी अपकमिंग फिल्म की शूटिंग के लिए साथ आए है। यह एक हॉरर फिल्म है, जिसे लेकर नवाजुद्दीन सिद्दीकी के फैंस काफी एक्साइटेड हैं। सोमवार को नवाजुद्दीन सिद्दीकी, निर्माता और अभिनेता सोहम शाह को मुंबई के मड आइलैंड में देखा गया। इस दौरान अपने फिल्म क्रू के साथ दिखाई दिए। सोहम शाह, नवाजुद्दीन सिद्दीकी से बातचीत करते थे। यह दोनों फिल्म 'तुम्बाड 2' की शूटिंग शुरू कर चुके हैं। बता दें कि 2018 में रिलीज हुई हॉरर, थ्रिलर फिल्म 'तुम्बाड़' का यह सीक्वल है।

तुम्बाड 2 का दर्शक काफी वक्त से इंतजार कर रहे हैं। अब इस फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है। नवाजुद्दीन के किरदार की जहां तक बात है तो उनके किरदार का नाम पांडुरंग होगा। फिल्म भी इमोशनल और साइकोलॉजिकल है। इसमें नवाज के किरदार में कई परतें होंगी। कहानी को लेकर भी मेकर्स का कहना है कि यह पिछली फिल्म से ज्यादा डरावनी होगी। तुम्बाड की बात करें तो साल 2018 में रिलीज हुई इस डार्क फैंटेसी-हॉरर फिल्म में लालच के दुष्परिणामों को दिखाया गया था। फिल्म की कहानी 20वीं सदी की शुरुआत के एक छोटे से गांव तुम्बाड में सेट है। इसमें मुख्य भूमिका में विनायक राव और हस्तर नाम का एक श्रापित देवता है। फिल्म काफी डरावनी थी और दर्शकों को काफी पसंद आई थी।

अजब-गजब | बहुत कम लोग जानते हैं भारत में सबसे पहले बिजली कहां आयी

सबसे पहले कोतकाता की सड़कों पर व कर्नाटक के कोलार शहर में हर घर में पहुंची थी बिजली

आज बिजली हमारे जीवन का सबसे जरूरी हिस्सा बन चुकी है। घर की रोशनी से लेकर पंखा, टीवी, फ्रिज, कंप्यूटर और स्मार्टफोन चार्ज करने तक लगभग हर काम बिजली पर निर्भर है। ऐसे में आज के दौर में बिना बिजली के जीवन की कल्पना करना भी मुश्किल है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि भारत का पहला शहर कौन सा था, जिसके हर घर में बिजली पहुंची थी? India's First सीरीज के तहत आज हम आपको उस शहर के बारे में बताने जा रहे हैं। भारत में बिजली ब्रिटिश काल में ही आ गई थी और इसकी शुरुआत किसी एक घर से नहीं, बल्कि सार्वजनिक सड़कों से हुई। इस तरह देश का पहला शहर कोलकाता था, जहां की सड़कों पर पहली बार बिजली की रोशनी पहुंचाई गई थी, लेकिन कर्नाटक का कोलार देश में पहला शहर था, जिसके हर घर तक बिजली पहुंची।

ऐसे में अगर सवाल भारत में सबसे पहले बिजली की रोशनी कहां जली से जुड़ा है, तो इसका सीधा जवाब है कोलकाता। तारीख थी 24 जुलाई 1879, जब 'पीडब्ल्यू फ्ल्यूरी एंड कंपनी' ने वहां की सड़कों पर पहली बार इलेक्ट्रिसिटी की रोशनी पहुंचाई थी। उस दौर में यह लोगों के लिए बिल्कुल नया अनुभव था, क्योंकि तब तक रोशनी के लिए मुख्य रूप से मिट्टी तेल के दीये और मशालें इस्तेमाल होती थीं। ऐसे में तारों से जलने वाले बल्बों को देखकर उस वक्त लोग दंग रह गए थे। इसके बाद धीरे-धीरे अन्य बड़े शहरों में बिजली का विस्तार शुरू हुआ।

लेकिन यहां एक बड़ा अंतर है जो अक्सर लोग भूल जाते हैं। सड़कों पर रोशनी पहुंचाना और एक पूरे शहर का विद्युतीकरण करना, ये दो अलग बातें हैं। अगर बात पूरी तरह विद्युतीकरण वाले पहले शहर की करें, तो वह गौरव कर्नाटक के कोलार को प्राप्त है। कर्नाटक की कोलार गोल्ड फील्ड्स उन शुरुआती स्थानों में थी, जहां बिजली का संगठित इस्तेमाल खदानों और रिहायशी इलाकों तक पहुंचा। इस पूरे शहर को बिजली से लैस किया गया, जिसे खास तौर पर सोने की खदानों में काम करने वाले मजदूरों के रहने के लिए बसाया गया था। 1902 के आसपास यहां खदानों के संचालन, मशीनों और रोशनी के लिए बिजली का इस्तेमाल शुरू हुआ। कोलार गोल्ड फील्ड्स को बिजली पहुंचाने के लिए कावेरी नदी पर शिवनासमुद्र जलप्रपात के पास भारत का पहला जलविद्युत केंद्र स्थापित किया गया था। दिलचस्प बात यह है कि इस गोल्ड माइन पर 'KGF' नाम की सुपरहिट फिल्म भी बनी, जिसने बॉक्स ऑफिस पर कमाई के कई रिकॉर्ड्स बनाए थे।

फिल्म में खदानों के जिस माहौल और वहां के मजदूरों की जिंदगी को दिखाया गया है, उसका एक बड़ा हिस्सा इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से प्रेरित है। उस दौर में कोलार गोल्ड फील्ड्स को 'लिटिल इंग्लैंड' भी कहा जाता था, क्योंकि यहां बिजली, पानी और क्लब जैसी तमाम आधुनिक सुविधाएं मौजूद थीं, जो उस वक्त लंदन जैसे शहरों में ही हुआ करती थीं। कोलकाता में जहां बिजली का इस्तेमाल व्यापारिक और प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए शुरू हुआ था, वहीं कोलार में यह पूरी तरह से औद्योगिक क्रांति और संसाधनों के दोहन का परिणाम था।

1899 में कलकत्ता इलेक्ट्रिक सप्लाई कॉर्पोरेशन की स्थापना ने भारत में बिजली के वितरण को एक व्यवस्थित रूप दिया। इसके बाद 1905 में दिल्ली और फिर धीरे-धीरे अन्य शहरों तक बिजली पहुंचने लगी। आज भारत दुनिया के उन देशों में शामिल है, जहां बिजली उत्पादन और खपत का स्तर बहुत ऊंचा है, लेकिन इस विशाल नेटवर्क की नींव उन्हीं 19वीं सदी के प्रयोगों पर टिकी है। यह जानकारी न केवल हमारे सामान्य ज्ञान को बढ़ाती है, बल्कि यह भी बताती है कि भारत का औद्योगिक इतिहास कितना समृद्ध रहा है। सोने की खदानों से लेकर कोलकाता की सड़कों तक, बिजली के इस सफर ने भारत की सूरत बदल दी। आज जब हम अपने घर का स्विच ऑन करते हैं, तो शायद ही हमें उस 1879 की रात की याद आती होगी, लेकिन वह एक बल्ब का जलना भारत के आधुनिक भविष्य की पहली किरण थी।

टूथब्रश बना 'साइलेंट बम' हुआ ऐसा धमाका कि मंजर देख हैरान रह गये लोग

रात का समय था चारों ओर सन्नाटा और लोग गहरी नींद में सो रहे थे। तभी घर के एक कोने में रखा एक छोटा सा इलेक्ट्रिक टूथब्रश अचानक ऐसा खतरा बन गया, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। न कोई आवाज, न कोई चेतावनी बस कुछ ही पलों में धुआं फैल गया, जलने की तेज गंध आने लगी और बाथरूम की दीवारों पर काले निशान पड़ गए। सुबह जब महिला की नींद खुली, तो सामने का नजारा देखकर वह हैरान रह गईं। एक मामूली सा दिखने वाला टूथब्रश इतना खतरनाक कैसे बन सकता है? यह घटना सिर्फ एक हादसा नहीं, बल्कि एक बड़ी चेतावनी भी है। 33 साल की शार्लोट बोवर्स ने बताया कि उनके बाथरूम में रखा इलेक्ट्रिक टूथब्रश अचानक फट गया। यह घटना रात में उस समय हुई, जब वह गहरी नींद में सो रही थीं। सुबह उठकर जब उन्होंने बाथरूम देखा, तो वहां काले धुएं के निशान और जली हुई दीवारें देखकर वह घबरा गईं। उनका कहना है कि अगर बाथरूम में लगा कांच और स्टील फ्रेम आग को नहीं रोकता तो यह हादसा और भी बड़ा हो सकता था। इस घटना को और भी चौंकाने वाली बात यह है कि टूथब्रश न तो चार्जिंग पर लगा था और न ही गीला था। शार्लोट पिछले 8 महीनों से उसी टूथब्रश का इस्तेमाल कर रही थीं और कभी कोई परेशानी नहीं हुई थी। आमतौर पर इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स में आग लगने का कारण ओवरचार्जिंग या पानी को माना जाता है, लेकिन इस मामले में ऐसा कुछ भी नहीं था यही वजह है कि यह घटना और भी रहस्यमयी बन जाती है। इस धमाके की वजह से घर की बिजली भी कुछ समय के लिए चली गई और बाथरूम का एग्जॉस्ट फैन भी खराब हो गया। यह घटना हमें साफ तौर पर यह दिखाती है कि रोजमर्रा में इस्तेमाल होने वाले छोटे-छोटे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स भी कभी-कभी बड़ा खतरा बन सकते हैं। इसलिए अगर आप भी इलेक्ट्रिक टूथब्रश या अन्य गैजेट्स इस्तेमाल करते हैं, तो समय-समय पर उनकी जांच करते रहें, खराब होने पर तुरंत बदलें और सुरक्षा के नियमों का पालन जरूर करें। थोड़ी सी सावधानी आपको बड़े खतरे से बचा सकती है।

कुश्ती के विकास के लिए राजेश्वर ने की 5 लाख की सहयोग की घोषणा

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान की ओर ये बड़ा आयोजन

» देश के साथ विदेशों से भी पहुंची प्रतिभाओं से बढ़ी प्रतियोगिता की गरिमा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। केडी सिंह बाबू स्टेडियम में आयोजित रेसलिंग गोल्ड कप 2026 ने इस बार कुश्ती प्रेमियों को रोमांच और परंपरा का अद्भुत संगम देखने का अवसर दिया। अमर शहीदों की पुण्यतिथि के मौके पर आयोजित इस प्रतियोगिता में देश विदेश से आए पहलवानों ने अपने दमदार प्रदर्शन से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में सरोजनीनगर के विधायक डा. राजेश्वर सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की और आयोजन की सराहना करते हुए कुश्ती को बढ़ावा देने के लिए 5 लाख रूपयों की सहयोग राशि देने की घोषणा की।

उन्होंने उम्मीद जताई कि इस सहयोग से भविष्य में और बड़े स्तर पर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा सकेगा और युवा प्रतिभाओं को मंच मिलेगा। इस आयोजन में उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र और पंजाब जैसे राज्यों के साथ साथ जॉर्जिया और ईरान से भी पहलवानों ने भाग लिया। कुल 45 प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की सहभागिता ने प्रतियोगिता को अंतरराष्ट्रीय रंग प्रदान किया। मुकाबलों के दौरान खिलाड़ियों की ताकत, तकनीक और स्टैमिना का बेहतरीन तालमेल देखने को मिला।

कुश्ती हमारी पांच हजार वर्ष पुरानी विरासतः डॉ. सिंह

डा. राजेश्वर सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि कुश्ती भारत की लगभग पांच हजार वर्ष पुरानी गौरवशाली परंपरा रही है। यह केवल एक खेल नहीं बल्कि शक्ति संयम तकनीक और संस्कृति का अद्भुत संगम है। उन्होंने कहा कि अखाड़ा परंपरा और गुरु शिष्य परंपरा ने इस खेल को सदियों तक जीवित रखा है और समाज को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने आज के मुकाबलों का उल्लेख करते हुए कहा कि खिलाड़ियों ने जिस तरह स्टाइल और तकनीक का प्रदर्शन किया वह भारतीय कुश्ती के उज्वल भविष्य की ओर संकेत करता है। डा० सिंह ने खिलाड़ियों को राष्ट्र की अमूल्य धरोहर बताते हुए कहा कि उनमें अनुशासन समर्पण और राष्ट्रभक्ति की भावना कूट कूट कर भरी होती है। उन्होंने कहा कि खिलाड़ी न केवल खुद को स्वस्थ और संस्कारित रखते हैं बल्कि अपने प्रदर्शन से देश का नाम विश्व पटल पर ऊंचा करते हैं। इसी कारण वे समाज के सर्वश्रेष्ठ नागरिकों में गिने जाते हैं।

ऐसे आयोजनों से कुश्ती को वैश्विक मंच पर मिलती है नई पहचान : विधायक

इस आयोजन में मुख्य अतिथि के तौर पर पहुंचे लखनऊ की सरोजनी नगर क्षेत्र से विधायक डा. राजेश्वर सिंह ने कहा कि इस तरह की अंतरराष्ट्रीय भागीदारी से न केवल प्रतियोगिता की प्रतिष्ठा बढ़ती है बल्कि भारतीय कुश्ती को वैश्विक मंच पर नई पहचान भी मिलती है। उन्होंने आयोजन की सफलता के लिए आयोजक राजेश कुमार सिंह को बधाई दी।

पीएम मोदी ट्रंप के पूरी तरह से नियंत्रण में हैं : राहुल गांधी

» लोस में पश्चिम एशिया की स्थिति पर प्रधानमंत्री के भाषण पर नेता प्रतिपक्ष ने दी प्रतिक्रिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा में पश्चिम एशिया की स्थिति पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के भाषण पर टिप्पणी करते हुए, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने अमेरिका का नाम न लेने के लिए उनकी आलोचना की और कहा कि वे राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पूरी तरह से नियंत्रण में हैं। वडोदरा में आदिवासी अधिकार संविधान सम्मेलन को संबोधित करते हुए कांग्रेस सांसद ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी संसद में बहस नहीं कर सकते क्योंकि वे समझौता कर चुके हैं। राहुल ने कहा कि सुना है... प्रधानमंत्री ने 25 मिनट का भाषण दिया है। लेकिन मेरी गारंटी है- वो पार्लियामेंट में डिबेट नहीं कर सकते, क्योंकि वह कं प्रोमाइज्ड हैं।

उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी ने अभी 25 मिनट का भाषण दिया, लेकिन अमेरिका के खिलाफ एक शब्द नहीं बोला। नरेंद्र मोदी 100प्रतिशत ट्रंप के कंट्रोल में हैं। ट्रंप के सामने नरेंद्र मोदी चूं तक नहीं कर सकते। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि ट्रंप ने नरेंद्र मोदी को कंट्रोल कर रखा है। दो कारण हैं- पहला एपस्टीन और दूसरा अडानी। नरेंद्र मोदी ने ट्रंप से कह आप जो हुक्म करेंगे, हम वही करेंगे। हम आपसे पूछे बिना किसी से तेल और नेचुरल गैस नहीं खरीदेंगे।

ट्रेड डील कर भारत का कृषि सेक्टर अमेरिका के लिए खोल दिया

अपने हमला जारी रखते हुए राहुल ने कहा कि नरेंद्र मोदी ने ट्रेड डील कर भारत का कृषि सेक्टर अमेरिका के लिए खोल दिया। हमारे यहां छोटे खेत होते हैं, वहीं अमेरिका में हजारों एकड़ के बड़े खेत होते हैं। हमारे यहां लोग हाथ से काम करते हैं और वहां बड़ी मशीनों से काम होता है। अगर अमेरिका का माल भारत आने लगा तो हमारे किसान बर्बाद हो जाएंगे। हमें मिलकर संविधान की रक्षा करनी है। संविधान की रक्षा में ही हिंदुस्तान के आदिवासियों, गरीबों, मजदूरों की रक्षा है। अगर संविधान खत्म हो गया तो हमारे पास कुछ नहीं बचेगा।

अमेरिका का नरेंद्र मोदी को सीधा मैसेज है कि ज्यादा ऊटपटांग हरकत की तो समझ लेना

उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी और भाजपा का पूरा फाइनेंशियल स्ट्रक्चर अडानी है। नरेंद्र मोदी ने देशभर के पोर्ट, एयरपोर्ट, सीमेंट कंपनी, सोलर पॉवर, विंड पॉवर और सारा इन्फ्रास्ट्रक्चर अडानी को सौंप दिया। अमेरिका में अडानी पर जो केस है, दरअसल वो नरेंद्र मोदी को धमकाने के लिए है। अमेरिका का नरेंद्र मोदी को सीधा मैसेज है कि ज्यादा ऊटपटांग हरकत की तो समझ लेना। ट्रंप ने साफ कहा है- मैं मोदी का करियर खत्म कर सकता हूं।

वर्ष 2026 तक पीएम नहीं रहेंगे मोदी : केजरीवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अरविंद केजरीवाल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लेकर कहा कि पीएम मोदी 2026 तक प्रधानमंत्री के पद पर नहीं रह पाएंगे। उनका राजनीतिक दौर खत्म होने वाला है। केजरीवाल ने आरोप लगाते हुए कहा कि मोदी सरकार अब जनता के बीच अलोकप्रिय हो चुकी है और चुनाव बेईमानी से जीते जा रहे हैं।

उन्होंने दिल्ली चुनाव का उदाहरण देते हुए कहा कि उनकी विस में बड़ी संख्या में वोट कटवाए गए। पिछले 12 सालों में सरकार ने कई गलत काम किए और यह दौर इतिहास में काले अक्षरों में लिखा जाएगा। केजरीवाल ने कहा कि जब देश को मोदी और अमित शाह से मुक्ति मिलेगी, तब उन्हें संतोष होगा कि उन्होंने इस लड़ाई में योगदान दिया। संजय राउत की किताब 'अनलाइकली पैराडाइज' के विमोचन के दौरान अरविंद केजरीवाल ने यह बातें कही।

सीलिंग की कार्रवाई से बढ़ी नगर निगम जोन-1 की वसूली

» नगर आयुक्त गौरव कुमार के निर्देश पर आई तेजी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। नगर आयुक्त गौरव कुमार के निर्देश पर नगर निगम द्वारा बकाया कर की वसूली को लेकर सभी जोनों में अभियान तेज कर दिया गया है। इसी क्रम में नगर निगम जोन-1 में बकायेदारों के खिलाफ सख्त रुख अपनाते हुए सीलिंग की कार्रवाई की जा रही है, जिससे वसूली में उल्लेखनीय बढ़ोतरी देखने को मिली है। नगर निगम की टीम द्वारा लगातार अभियान चलाते हुए राज्य संपत्ति विभाग से करीब 7.08 करोड़ रुपये की वसूली की गई है।

जोनल अधिकारि का कहना है कि बकाया कर जमा न करने वाले बड़े बकायेदारों पर सीलिंग जैसी कार्रवाई से वसूली में तेजी आई है और नगर आयुक्त द्वारा दिए गए लक्ष्य को पूरा करने की दिशा में तेजी से काम किया जा रहा है।जोनल अधिकारी ओम प्रकाश सिंह के नेतृत्व में कर अधीक्षक अनुराग उपाध्याय राजस्व निरीक्षक देवी शंकर दुबे, संजय सिंह समेत सभी राजस्व निरीक्षकों की सक्रियता और मेहनत से वसूली लगातार बढ़ रही है। नगर निगम अधिकारियों के मुताबिक आगे भी बकायेदारों के खिलाफ इसी तरह सख्त कार्रवाई जारी रहेगी, ताकि राजस्व लक्ष्य को समय पर पूरा किया जा सके।

अरुंधति बनीं फरवरी की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय महिला टीम की तेज गेंदबाज अरुंधति रेड्डी को फरवरी 2026 के लिए आईसीसी महिला प्लेयर ऑफ द मंथ चुना गया है। यह उनके करियर में पहली बार है जब उन्हें यह सम्मान मिला है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शानदार प्रदर्शन के दम पर उन्होंने यह उपलब्धि हासिल की। इस सम्मान पर खुशी जताते हुए रेड्डी ने कहा कि यह उनके लिए बेहद गर्व का पल है, खासकर इसलिए क्योंकि वह ऑस्ट्रेलिया में टी20 सीरीज जीत में टीम के लिए योगदान दे सकीं।

उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलिया को उसकी धरती पर हराना आसान नहीं होता, इसलिए यह उपलब्धि और भी खास है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज में रेड्डी ने शानदार गेंदबाजी करते हुए सबसे ज्यादा आठ विकेट लिए। इस दौरान उनका औसत 10.87 और इकॉनमी रेट 7.25 रहा। उनके बेहतरीन प्रदर्शन की बदौलत भारत ने सीरीज 2-1 से अपने नाम की, जो 2016 के बाद ऑस्ट्रेलिया में भारत की पहली टी20 सीरीज जीत है। सिडनी में खेले गए पहले मैच में उन्होंने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 4/22 विकेट लिए और प्लेयर ऑफ द मैच बनीं। इसके बाद कैनबरा में 2/30 और एडिलेड में निर्णायक मैच में 2/35 विकेट लेकर टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। आगे भारत की नजरें इंग्लैंड और वेल्स में होने वाले आईसीसी महिला टी20 विश्व कप 2026 पर होंगी, जो 12 जून से शुरू होगा। टीम की अगली चुनौती दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पांच मैचों की टी20 सीरीज है, जो 17 अप्रैल से शुरू होगी। कप्तान हरमनप्रीत कौर की अगुवाई में भारतीय टीम मई में इंग्लैंड दौरे पर जाएगी, जहां एक टेस्ट और तीन टी20 मैच खेले जाएंगे। यह सीरीज वर्ल्ड कप से पहले टीम के लिए अहम तैयारी साबित होगी।

» रेड्डी बोलीं- ऑस्ट्रेलिया को उसकी धरती पर हराना आसान नहीं होता, इसलिए यह उपलब्धि और भी खास

अमेरिका का टूटता घमंड, खत्म होती धौंस

बगदाद में अमेरिकन कमांड सेंटर का खात्मा, जंग से पीछे हटते कदम

बोला ईरान ट्रंप की बातचीत का दावा झूठा जवाबी कार्रवाई के डर से पीछे हटा अमेरिका

रूस की चेतावनी ईरान के परमाणु बुनियादी ढांचे पर अमेरिकी इजरायली हमले अस्वीकार्य

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। झुकती है दुनिया झुकाने वाला चाहिए जी हां ईरान के ताजा बयान कि ट्रंप की बातचीत का दावा झूठा है और अमेरिका जवाबी कार्रवाई के डर से पीछे हटा है ने पूरी दुनिया की राजनीति को मथ देने का काम किया है। ईरान का यह बयान सिर्फ एक प्रतिक्रिया नहीं है बल्कि सीधा मनोवैज्ञानिक वार है। यह उस धारणा पर हमला है जो दशकों से दुनिया के दिमाग में बैठाई गयी कि अमेरिका कभी पीछे नहीं हटता। लेकिन अगर आज यह कहा जा रहा है कि वह डर के कारण पीछे हटा है तो यह सिर्फ एक देश पर नहीं बल्कि उसकी पूरी वैश्विक छवि पर सवाल है।

वहीं बगदाद का वह कमांड सेंटर जो कभी फैसलों का केंद्र था आज उसकी खामोशी बहुत कुछ कह रही है। यह खामोशी चीखती है कि ताकत सिर्फ हथियारों से नहीं बल्कि आत्मविश्वास और नियंत्रण से बनती है। और जब नियंत्रण डगमगाता है तो सबसे मजबूत दीवारें भी दरकने लगती हैं। दो दशकों से ज्यादा समय से मध्य पूर्व में पहरेदार की भूमिका निभा रहा अमेरिकन कमांड सेंटर की जगह पर अब मलबा है और अमेरिकन सैनिक वहां से कूच कर चुके हैं और यहीं से खेल और भी खतरनाक हो जाता है। क्योंकि जब जंग अहंकार और प्रतिष्ठा की बन जाती है तब फैसले समझदारी से नहीं बल्कि दबाव और प्रतिक्रिया से लिए जाते हैं। और ऐसे फैसले अक्सर दुनिया को उस मोड़ पर ले जाते हैं जहां से वापसी आसान नहीं होती। तो सवाल अब सिर्फ यह नहीं है कि कौन सही है और कौन गलत। सवाल यह है कि इस टकराव का अगला कदम क्या होगा? क्या यह महज बयानबाजी है या आने वाले किसी बड़े भूचाल की आहट? यकीन मानिए यह सिर्फ शुरुआत है।

महंगाई अब आंकड़ा नहीं हर घर की बेचैनी बनेगी

ईराक से अमेरिका के सैन्य ठिकानों का सिमटना कोई साधारण घटना नहीं है। यह उस पहरेदार का हटना है जो वर्षों से एक अस्थिर इलाके को किसी तरह थामे हुए था। और जैसे ही यह पहरा ढीला पड़ा है वैसे ही कई अदृश्य ताकतें अपने अपने दांव चलने को तैयार खड़ी हैं। सवाल यह नहीं है कि वहां क्या होगा सवाल यह है कि जब वहां सब कुछ बदलेगा तो उसका असर भारत तक कैसे और कितनी तेजी से पहुंचेगा।

भारत को भी आगे करना पड़ेगा मुश्किलों का सामना

भारत जो अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए उसी क्षेत्र पर निर्भर है अब एक नए जोखिम के मुहाने पर खड़ा है। अगर खाड़ी में हलचल बढ़ती है तो तेल सिर्फ महंगा नहीं होगा बल्कि यह हमारी अर्थव्यवस्था की सांसों पर बोझ बन जाएगा। पेट्रोल पंप से लेकर रसोई तक हर जगह इसकी तपिश महसूस होगी। महंगाई सिर्फ आंकड़ा नहीं रहेगी यह हर घर की बेचैनी बन जाएगी। खतरा सिर्फ आर्थिक नहीं है हजारों किलोमीटर दूर बैठा भारतीय कामगार जो खाड़ी देशों में अपनी मेहनत से परिवार चला रहा है वह अचानक इस उथल पुथल का सबसे कमजोर किरदार बन सकता है। अगर हालात बिगड़ते हैं तो सबसे पहले वही फंसेगा न घर लौटने का रास्ता आसान होगा न वहां टिके रहने की गारंटी। और जब वह हिलेगा तो उसके साथ पूरे भारत के लाखों घरों की नींव भी हिल जाएगी।

अमेरिका लगाए इजरायल पर लगाम पूर्व शीर्ष अधिकारी केंट का बयान

अमेरिका के एक पूर्व शीर्ष अधिकारी केंट ने इजरायल की आक्रामक सैन्य नीति पर सवाल उठाते हुए कहा है कि वाशिंगटन को तुरंत हस्तक्षेप कर तेल अवीव पर लगाम लगानी चाहिए। केंट के अनुसार इजरायल की लगातार सैन्य कार्रवाई पूरे क्षेत्र को व्यापक युद्ध की ओर धकेल रही है जिसका असर वैश्विक स्तर पर पड़ सकता है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर अमेरिका ने समय रहते संतुलित भूमिका नहीं निभाई तो यह संघर्ष नियंत्रण से बाहर हो सकता है। केंट ने यह भी कहा है कि अमेरिका की जिम्मेदारी केवल अपने सहयोगी का समर्थन करना नहीं बल्कि क्षेत्रीय शांति बनाए रखना भी है। उन्होंने कूटनीतिक प्रयासों को तेज करने और सभी पक्षों को वार्ता की मेज पर लाने की आवश्यकता पर जोर दिया। विश्लेषकों का मानना है कि इस तरह के बयान अमेरिका के भीतर भी नीति को लेकर बढ़ती असहमति को दर्शाते हैं जहां कुछ पूर्व अधिकारी युद्ध के विस्तार को लेकर गंभीर चिंता जता रहे हैं।

कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट

डोनाल्ड ट्रंप द्वारा संभावित सैन्य हमलों को रोकने की घोषणा के बाद वैश्विक बाजारों ने राहत की सांस ली है। इस बयान का सीधा असर कच्चे तेल की कीमतों पर देखा गया जहां अचानक गिरावट दर्ज की गई। विशेषज्ञों का कहना है कि मध्य पूर्व में तनाव कम होने की उम्मीद से निवेशकों का भरोसा बढ़ा और बाजारों में स्थिरता लौटने लगी। ऊर्जा बाजार विशेष रूप से संवेदनशील रहते हैं और किसी भी सैन्य टकराव की आशंका से तेल की कीमतें तेजी से बढ़ जाती हैं। लेकिन ट्रंप की घोषणा ने यह संकेत दिया कि फिलहाल स्थिति नियंत्रण में रह सकती है जिससे आपूर्ति बाधित होने का डर कम हुआ। हालांकि विश्लेषक यह भी चेतावनी दे रहे हैं कि यह राहत अस्थायी हो सकती है क्योंकि क्षेत्र में तनाव पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। निवेशक अब भी सतर्क नजर बनाए हुए हैं और किसी भी नए घटनाक्रम पर बाजार की दिशा तेजी से बदल भी सकती है।

कोलंबिया विमान हादसे में 66 जवानों की मौत

» कई अभी भी लापता, राहत और बचाव कार्य जारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बोगोटा। दक्षिण अमेरिकी देश कोलंबिया में हुए भीषण विमान हादसे में 60 से ज्यादा लोगों की मौत की खबर है। कई लोग अभी भी लापता हैं। हादसे का शिकार हुए विमान में 125 लोग सवार थे और टेक ऑफ के तुरंत बाद ही यह विमान क्रै श हो गया था। कोलंबिया की सेना ने करीब 66 जवानों की मौत की पुष्टि की है। इससे पहले कोलंबिया के प्यूर्तो लेगीजामो शहर के मेयर ने विमान हादसे में 34 जवानों की मौत की बात कही थी।

मीडिया रिपोर्ट्स में 20 से ज्यादा जवानों के लापता होने की बात कही गई है। वायुसेना ने बताया कि हरक्यूलिस ष्ट-130 विमान में 121 लोग सवार थे, जिनमें 110 सैनिक और 11 क्रू सदस्य शामिल थे। यह विमान सोमवार को टेक-ऑफ के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान ने कोलंबिया के पुटुमायो स्थित प्यूर्टो लेगुइजामो से उड़ान भरी थी लेकिन कुछ ही देर बाद वह दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला

» महिला सैन्य अधिकारियों के परमानेंट कमीशन पर मुहर

» पेंशन और समानता का अधिकार सुरक्षित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय सशस्त्र बलों में लैंगिक समानता की दिशा में एक बड़ा मील का पत्थर स्थापित करते हुए, सुप्रीम कोर्ट ने महिला अधिकारियों को परमानेंट कमीशन दिए जाने के अपने पिछले निर्णयों को सही ठहराया है। अदालत ने स्पष्ट किया कि सेना में महिलाओं के स्थायी सेवा के अधिकार में अब कोई दखल नहीं दिया जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिया कि महिला अधिकारियों को पहले से दिया गया परमानेंट कमीशन बरकरार रहेगा, और यह साफ कर दिया कि मौजूदा व्यवस्था में कोई दखल नहीं दिया जाएगा। एक बड़ी राहत देते हुए, सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि महिला अधिकारी—खास तौर पर शॉर्ट सर्विस कमीशन अधिकारी और वे लोग जिन्होंने इस मामले में दखल दिया था-जिन्हें कानूनी कार्रवाई के दौरान किसी भी चरण में सेवा से मुक्त कर दिया गया था, उन्हें 20 साल की सेवा पूरी कर चुका माना जाएगा। इसके परिणामस्वरूप, वे पेंशन से जुड़े फायदों की हकदार होंगी।हालांकि, कोर्ट ने यह साफ किया कि पेंशन के फायदे तो दिए जाएंगे, लेकिन ये अधिकारी वेतन के किसी भी बकाया के हकदार नहीं होंगे। इस फैसले को सशस्त्र बलों में लैंगिक समानता सुनिश्चित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम के तौर पर देखा जा रहा है, जो भारतीय सेना में महिला अधिकारियों के अधिकारों और सेवा शर्तों को और मज़बूत करता है।

धर्मांतरण करने पर अनुसूचित जाति का दर्जा समाप्त होगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को एक अहम फैसले में कहा कि धर्म परिवर्तन करने वाला व्यक्ति अनुसूचित जाति का दर्जा पूरी तरह से खो देता है। सुप्रीम कोर्ट ने आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट का फैसला बरकरार रखा है। हाईकोर्ट ने अपने फैसले में कहा था कि अगर कोई व्यक्ति उदाहरण के लिए ईसाई धर्म अपना लेता है और ईसाई धर्म के अनुसार जीवन जी रहा है तो उसे अनुसूचित जाति का व्यक्ति नहीं माना जा सकता। अदालत ने कहा कि हिंदू धर्म, सिख धर्म और बौद्ध धर्म के अलावा किसी अन्य धर्म को मानने वाला व्यक्ति अनुसूचित जाति का सदस्य नहीं माना जा सकता। सुप्रीम कोर्ट ने कहा सांविधानिक आदेश, 1950 में साफ कहा गया है कि खंड-3 में बताए गए धर्मों के अलावा किसी भी धर्म में धर्मांतरण करने पर जन्म के बावजूद, अनुसूचित जाति का दर्जा तुरंत समाप्त हो जाता है। यह आदेश एक ऐसे व्यक्ति के मामले में दिया गया, जिसने ईसाई धर्म अपना लिया था और अब पेस्टर के तौर पर काम कर रहा है, लेकिन उसने कुछ लोगों के खिलाफ एससी-एसटी (अत्याचार रोकथाम) कानून के तहत मामला दर्ज कराया था। मामला दर्ज कराने वाले व्यक्ति ने एससी-एसटी कानून के तहत संरक्षण की मांग की थी। हालांकि जिन लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया, उन्होंने इसे चुनौती दी और दावा किया कि पीड़ित ईसाई धर्म अपना चुका है।

महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार: मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com |website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।
स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा